दो शब्द

निरंतर सम्पूर्ण सुख, शान्ति, सम्पत्ति और आरोग्य की कामना मानवीय मन में सदा बनी रहती है। हरेक इसे प्राप्त करने हेतु अपने अपने स्तर पर सदा ही प्रयत्नशील रहता है। परंतु वर्तमान समय अनुसार कलियुग के अन्त में सम्पूर्ण सुख, सम्पूर्ण शान्ति और सम्पूर्ण आरोग्य किसी को भी प्राप्त नहीं है। चाह है परंतु सम्पूर्ण प्राप्ति न होने के कारण अक्सर वह सवाल सभी के मानसपटल पर उभरता देखा जाता है कि इस प्रकार सम्पूर्ण सुख..... और वह भी व्यक्तिगत स्तर पर नहीं सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक ही समय पर प्राप्त हो क्या ऐसा संभव है, क्या कभी ऐसा समय था जब प्राप्तियों से सभी मानव भरपूर थे। क्या ऐसी स्वर्णिम दुनिया या सुखमय संसार वास्तविकता थी या मानविय मन की कल्पना। यह इतिहास की सच्चाई थी या दंतकथाओं की रंजकता। और इसकी कामना मनुष्य आत्माने गतकाल में किये अनुभवों का परिणाम है या उसकी इनके प्रति आशा का परिणाम।

जितना गहराई से इस बात के चिंतन में अन्तर्मुख हुआ जाता है, जितना इतिहास के पन्नों की यात्रा की जाती है, जितना धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया जाता है और जितना विज्ञान मनुष्य जाति के लिए दी गयी अनमोल उपलब्धियों और उसके केवल सकारात्मक उपयोग को देखा जाता है और उतना ही यह स्वर्णिम सुखमय संसार केवल कल्पना नहीं किन्तु सत्यता वास्तविकता थी - इसकी पुष्टि होती है। लेकिन यह स्वर्णिम सुखमय संसार है क्या और कैसा था।

अक्सर यह सवाल काफी लोगों के मन में आता है और पूछते हुए भी देखा जाता है कि क्या स्वर्णयुग या खुशियों की दुनिया यह वास्तविकता में अस्तित्व में थी या सिर्फ कल्पना मात्र है। यदि हम धर्म इतिहास और यहाँ तक की विज्ञान इनके माध्यम से भी खोज करे तो भी इस बात की पुष्टि होती है कि हाँ यह एक वास्तविकता है। लेकिन आखिर यह स्वर्णिम युग है क्या?

यह एक गौरवशाली युग था, जहाँ आत्म-उन्नति और आत्म-कल्याण हर मनुष्य का जन्म सिद्ध अधिकार था और जहाँ धर्म और कर्म इन दोनों के बीच एक योग्य सुसंवाद और समता थी। यानि की कोई भी कर्म धर्म के विरूद्ध नहीं होता था।

यहाँ मनुष्य कोई भी व्यवहार करते वक्त इस बात की हमेशा स्मृति रखते थे कि वह सिर्फ कोई भौतिक शरीर नहीं है बल्कि इसको चलाने वाले चैतन्य रूप है। इस महान युग में व्यक्ति हर प्रकार से इतने उन्नत थे कि उनमें अनेक दैवी शक्तियों का संचार होता था। इन्ही शक्तियों को हिन्दू धर्म पूजनीय मानता है। इसाई धर्म के मान्यता के अनुसार स्वर्ण युग तब होता है जब धरती पर परमात्मा का राज्य स्थापित होता है।

यहाँ तक कि हमारे भविष्य दर्शियों ने पूर्वजों ने भी वक्त पर इस बात को दर्शाया हे कि आज इस असमानता, कोलाहल और बढ़ती अनैतिकता वाली दुनिया में जब नैतिक मूल्यों का पूर्ण नाश हो जायेगा तो इसका विनाश होकर फिर से सत्य और समानता वाली दुनिया स्थापित होकर धर्म की पुर्न स्थापना होगी। इसी नये युग में व्यक्ति दैवी पद के ऊँचाई पर विराजमान रहता है। यदि इन सारी बातों से निष्कर्ष निकाला जाय तो वो ये है कि स्वर्णयुग एक ऐसी दुनिया थी जहाँ जीवन का हर अंग या जीवन के चौखट का हर भाग जैसे शिक्षण पद्धति, कुटुम्ब पद्धति, समाज, जीवन, वास्तुशास्त्र, कला और संस्कृति, अर्थ व्यवस्था, राजनीति, विज्ञान और तकनिक, प्रशासन और पर्यावरण यह सारे अपने आदर्श स्वरूप में थे।

इस स्वर्ण युगी दुनिया और उसके व्यवस्थापन कि कुछ झलकियाँ हम इस पुस्तक द्वारा देख सकते हैं।

स्वर्णिम युग

प्रचुर धनसंपदा हो, आनंदित मन हो, स्वस्थ तन हो, सुखदाई सम्बन्ध हो, अपनी और संबंधियों की लंबी आयु के बारे में हम आश्वस्त हो, चहुँ ओर आनंददायी माहौल हो, दूर-दूर तक चिंता या भय का एहसास भी न हो - अगर ऐसा सुख किसी को प्रप्त है तो हम कहते है बड़ा भाग्यवान है लेकिन किसी एक के ऐसे भाग्य से कया होगा।

सभी का ऐसा श्रेष्ठ भाग्य सैंकडों वर्षो तक हो - यह स्वर्ग या स्वर्णिम संसार कहलाता है अर्थात व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और विश्व सभी का सर्वश्रेष्ठ भाग्य एक ही समय पर हो उसको स्वर्ग कहा जाता है।

सर्व श्रेष्ठ भाग्य में निम्नलिखित बातों के भाग्य का विश्लेषण प्रसतुत है:-

- तन का भाग्य
- मन का भाग्य
- धन का भाग्य
- संबंध का भाग्य और
- जन (समाज) का भाग्य

वर्तमान संसार में कहीं धन है तो शारीरिक स्वास्थ नहीं, कहीं शरीर अच्छा है तो धन के लिए भटकन है और कहीं तन और धन दोनों सहयोगी है तो व्यक्ति के संबंध जिनके स्नेहपाश में बंधकर वह स्वयं को सुखी समझता है लेकिन वह संबंध दु:खों का कारण बना हुआ है और यदा कदा कुछ समय के लिए यह सब ठीक हो भी जाए तो आखिर मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वो केवल स्वयं तक सिमित नहीं रह सकता। स्वयं के साथ वह अपनों का या अपनेवालों का सुख अवश्य चाहता है इसलिए बहुत बार स्वयं का दु:ख न भी हो तो दूसरों के दु:खों से भी वह दु:खी अवश्य होता है। अत: सम्पूर्ण शाश्वत सुख आज के संसार में है ही नहीं।

तन, मन, धन, संबंध के सुखों की बातें करते अगर हम संसार की और दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं चहूँ ओर दु:ख ही दु:ख है, कहीं आपघात तो कहीं लूट, कहीं भ्रष्टाचार तो कहीं पापाचार, कहीं प्राकृतिक प्रकोप तो कहीं घातपात और

विश्वासघात और शायद यही बातें है जो हमारे दु:खों से कहीं न कहीं संबंध रखती है। और हम कह उठते है हमारा भाग्य ही ऐसा है।

किन्तु स्वर्णिम युग में यही भाग्य सर्व श्रेष्ठ होगा।

1. तन का भाग्य:-

मनुष्य आत्माओं को सभी सुख-सुविधाओं की अनुभूति के लिए शरीर रूपी माध्यम अनिवार्य है। शरीर ही आत्मा का सबसे करीबी साथी है जो जीवन अन्त तक साथ निभाता है।

तो यह शरीर सुंदर हो, स्वस्थ हो, रोग-बीमारी या अकाले मृत्यु कभी न होगी इसके लिए आश्वस्त हो तब कहेंगे तन का भाग्य।

स्वर्णिम युग में मनुष्यों का शरीर इतना सुंदर और तन्दुरूस्त है कि उसे कंचनकाया कहा जाता है। वहाँ शरीर जीवन के अन्त तक चुस्त और तन्दुरूस्त रहता है। जब शरीर की मर्यादीत आयु पूरी हो तभी आत्मा स्व-इच्छा से शरीर को त्यागती है और उसे त्यागने से पूर्व उसे यह पूर्वाभास सहज ही हो जाता है कि वह शरीर छोड़कर नया जन्म कहाँ लेने वाली है। अत: मृत्यु का भय वहाँ बिल्कुल भी नहीं है। यह है तन का भाग्य.......

2. मन का भाग्य:-

आज के संसार में भी कहावत है - 'मन खुश तो जहाँन खुश' किन्तु समस्याओं से भरे इस संसार में मन की खुशी आँख-मिचौली के खेल-सी लगती हो गई है। दिनभर में कितनी बार मन भिन्न-भिन्न बातों के प्रभाव में गिरता, सम्भलता, हँसता, रोता रहता है। लेकिन यही मन निरंतर आनंदित हो, सदा खुश रहे यह हो सकता है।

मन सदैव स्वच्छ, शुद्ध, आनंदमय, सन्तुष्ट और खुश रहे इसके लिए व्यक्ति के पास सर्व प्राप्तियों की अनुभूति हो कोई भी कमी या जरूरत महसूस न हो अर्थात सबकुछ प्राप्त हो। उसे भविष्य का भी निश्चित ज्ञान हो कि वह भी सुखमय है अर्थात इस जीवन में कोई दु:ख, रोग या निर्धनता का भय न हो साथ ही साथ उसका मन सम्पूर्ण निर्विकारी हो, स्वच्छ हो तभी सर्व प्राप्तियाँ होते भी वह आनंदमय रह सकता

है। व्यक्ति स्वयं भी गुण विशेषताओं से संपन्न हो तब उसका मन आत्म-सम्मान और प्राप्ति के कारण एक आंतरिक संतुष्टता का अनुभव करता है जो सबसे जरूरी होता है। जिससे ही व्यक्ति के मन की बाह्यभटकन समाप्त हो वह 9अन्तर्मुखी सदासुखी" स्थिति का नेचरल अनुभव कर सकता है। स्वर्णिम युग में हर एक मानव सर्व प्रकार की प्राप्तियों से इतना संमन्न होगा की 9इच्छा" शब्द ही वहाँ पर नहीं होगा क्योंकि इच्छा शब्द की उत्पत्ति अभाव या आवश्यकता से जुड़ी है। वहाँ सभी के पास सब कुछ होगा..... इसलिए तुलनात्मक दृष्टिकोण से भी इच्छा को स्थान नहीं। साथ ही साथ वहाँ के मनुष्यों के लिए गायन है कि वे सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला संपूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी होते है अर्थात आंतरिक और बाह्य सम्पन्नता के कारण उनका मन एक अलौकिक खुमाी में सदैव झूमता रहता है, यही है मन का भाग्य.....

3. धन का भाग्य:-

जिसका नाम ही स्वर्णिम युग हो उसके क्या कहने......। जिस लक्ष्मी की आराधना धन की प्राप्ति अर्थ की जाती है वही वहाँ की महारानी हो तो वहाँ धन की क्या कमी..... स्वर्णिम युग में धन-संपदा इतनी अधिक होगी कि हर एक के पास धन पर्याप्त से कई गुणा अधिक होगा। अत: वहाँ धन के स्तर पर कोई भेद नहीं होगा। हर एक व्यक्ति स्वयं को व्यक्तिगत स्तर पर संपन्नतम अनुभव करेगा और समाज के सभी घटक भी सम्पन्नतम होंगे। सोना, हीरे, मोती इतने प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं कि उनका उपयोग दीवारों में डिजाइन एवम दीपकों सी चमक के लिए किया जाता है। अर्थात धन की रीति से भी वहाँ सामाजिक भाग्य श्रेष्ठतम है।

4. सम्बन्ध का भाग्य:-

तन सुंदर एवम स्वस्थ हो मन खुश और निर्मल हो, धन की कोई भी कमी न हो किन्तु संबंध जिनके साथ व्यक्ति रहता हो वा व्यावहारिक सम्पर्क रखता हो वहाँ बेबनाव है तो तन, मन, धन की सम्पन्नता भी व्यक्ति को सुखी नहीं बना सकती। किन्तु सतयुग में हर मानव अपने निजी गुणों में परिपूर्ण होगा, नैतिकता वहाँ अपनी चरमसीमा पर होगी, निर्विकारीता इतनी की विकारों का पता ही नहीं, पारस्परिक स्नेह इतना विशुद्ध, पावन और नेचुरल होगा कि उसे बताने के लिए शब्दों का

आधार लेने की आवश्यकता नहीं। संबंधों में प्रेम इतना कि उसमें परभाव लेशमात्र भी नहीं। संबंध इतने सुमंगल कि विश्वास हर श्वांस में बसा हो। जी हाँ..... यह कल्पना नहीं, यह है स्वर्ण युगी संबंध.... जिनसे भी एक दो को गलती से भी दु:ख की फिलींग नहीं आती..... बस संबंधों का सुख, संबंधों का स्नेह..... इसकी अनुभूति में वहाँ के मनुष्य हदों से ऊपर उठे हुए रहते हैं।

इस कारण वे श्रेष्ठ कर्म की प्रालब्ध के आधार पर बने हुए संबंध है। नि:स्वार्थ और निर्मोही ......।

5. जन (समाज) का भाग्य:-

व्यक्ति के संबंधों में कुटुम्ब, कुटुम्बों के संबंधों से समाज और समाज के संबंधों से विश्व समुदाय का निर्माण होता है।

जब हर व्यक्ति ही सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी और अन्य सभी प्राप्तियों से भी सम्पन्न हो तो कुटुम्ब, समाज और विश्व स्वत: ही कितना सुखमय होगा। वहाँ के मनुष्य स्वयं तो अपने जीवन में संपूर्ण सुखी है ही परंतु उन्हें अन्य किसी कुटुम्ब के दु:ख का भी समाचार कभी नहीं मिलता, न किसी का दु:ख कभी सुनाई या दिखाई देता है...... आज के दु:खमय संसार में तो सम्पूर्ण सुखी जन को परिभाषित करने के लिए हमें दु:ख नहीं होगा, ऐसा कहना पड़ता है क्योंकि हम दु:खों से इतने परीचित है कि सुखी होना माना दु:ख न होना यही हमारी व्याक्ष्या है। किन्तु वहाँ सुख हमारी कल्पना एवम मान्यताओं से बहुत ही ऊँचा होगा और वह भी एक ही समय समस्त मानवजाती के लिए न कि किसी व्यक्ति या कुटुम्ब के लिए। तो यह है जन का भाग्य......

‘सुखमय संसार’

आह! कितना सुन्दर प्यारा वो विश्व हमारा
नभ-जल-थल में, चल में-अचल में,
कहीं नहीं बँटवारा - वो विश्व हमारा.......

सतरंगी सूरज की किरणें चमकाती हर आँगन को
स्वच्छ चाँदनी भर-भर मोती दमकाती घर-आँगन को
झीलमिल तारें कहीं रिमझिम फुहारे
मौसम सावन प्यारा - वो विश्व हमारा......

रंग-बिरंगे पुष्प, बाग-वन मखमल सी धरनी होगी
प्रीत वसन परिधान पहन हर देवी सी रमणी होगी
साँझ-सवेरे झूमे हिलमिल सारे
ऐसा परिवार हमारा, वो विश्व हमारा ....

कितना ही अच्छा होगा, जहाँ प्रेम छलकता हर मन में
सत्य ज्ञान-विज्ञान सुमंगल, नशा निराला जन-जन में
मन की पुकार वो होगा संसार
जिस दिल से हमने संवारा - वो विश्व हमारा.......

सतयुग के अलग-अलग नाम

भारतः- सतयुग, कृतयुग, स्वर्ग, वैकुण्ठ

अरबीयनः- बहिश्त, जन्नत, अल्लाह का बगीचा

स्पेनः- एल डोरॅडो

इरानः- गार्डन ऑफ युमा

ग्रीस और रोमः- गोल्डन एज

स्कॅडनिव्हीयाः- लॅडस ऑफ गॉड

चीनः- क्वेन लुन

ईजिप्तः- तेपझीप

ऑस्ट्रेलियाः- ड्रीम टाइन

भगवानुवाचः- वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड, व्हॅल्युज वर्ल्ड, गार्डन ऑफ फ्लावर, सदगति धाम, जीवनमुक्ति धाम, वाइसलेस वर्ल्ड, निर्विकारी दुनिया, पुण्य आत्माओं की दुनिया, सुखधाम, परिस्तान

स्वर्णिम युग का अस्तित्व

1. स्वर्ग के विषय में अनेक धर्म की मान्यतायें

'बाईबल और कई अन्य अंग्रेजी किताबों में स्वर्ग के सौंदर्य की तुलना वन और बाग से की है। ईरान, सिरिया, उत्तरी अरब, मिस्त्र(इजिप्त), उत्तर आफ्रीका, युनान और दक्षिणी युरोप क्षेत्रों में जो नयनरम्य वन है, उनकी कारणवश ही सिन्धु की घाटी से लेकर नील नदी की घाटी तक बाईबल में स्वर्ग लोक बताया है।' (कैलासनाथ कौल की पुस्तिका से)

'भगवान ने पूरब से लेके पश्चिम तक जो स्वर्ग लोक बसाया उसमें चार नदियाँ बहती थी। खुदा ने पैदा किए मनुष्यों को वही बसाया।" (बायबल का पहला अध्याय)

'महा-जल-प्रलय होने के कारण देवता और आर्यो जैसे श्रेष्ठ जाति का पतन होना है। परमात्मा ने जिस सतपुरुष को अपने शुभ आगमन का साक्षात्कार कराया वही सज्जन मनुष्य(मनु) थे। जिने हम वर्तमान आदि पिता मानते है।'

'आर्यो के भारत में बाहर से आगमन का कोई प्रमाण नहीं है और इतिहास भी इस बारे में मौन है। यह संभव है कि जल-प्रलय के उपरान्त सिन्धु से नील क्षेत्र तक की स्वर्ग-सभ्यता के खंडित होने के बाद कुछ लोग समुह में इधर-उधर हुए हो। और इसी स्थलांतर को लोगों ने आर्य लोगों का भारत में बाहर से आगमन समझ लिया। हमारे पूर्वज जो देव या अमर जाति के थे, इसी पावन वसुंधरा के निवासी थे।' (ब्राह्मण वैदिक ग्रंथ)

हेवन अर्थात स्वर्ग

'यह युनानी लेटिन भाषा में आता है। इनका अभिप्राय देवताओं के निवासस्थान से है। इसी आधार पर इसाईयों के परलोक संबंधी विचारों से इसका अर्थ यह हुआ कि आगामी दुनिया में आनंद से रहने का स्थान।'

Paradise:- 'A Persian word means Royal Park'

(वैदिक संस्कृति का विश्वलोक)

स्वर्ग:- प्रत्यक्ष एक दुनिया है इसी कारण उसके समान अर्थ शब्द सकरतम्य, सकरताम, देव, नाकम, लोक (जगत) वेदों में वर्णन आता है उपरोक्त शब्द जीवन

के उच्चतम उपभोग दर्शाते हैं।

नाकम:- नाकम का अर्थ सुख

देव:- अर्थ सुख ऐसा होता है।

देव स्वर्ग नाकम ये सुख के स्थानों के नाम है जिनके कर्म अच्छे हैं वह (स्वर्ग में) जा सकते हैं। (निरूक्त अध्याय 2, खण्ड 14)

जन्नत में मनुष्य वृद्ध नहीं होगा। वहाँ डर, मृत्यु नहीं होगा। (अर्थवेद 18-4-4)

वह वृक्ष जिस पर सुंदर पक्षी मीठे फल खाते वहाँ ही निवास करते हैं वह कहते हैं पलिम बहोत मीठे है परंतु जो पिता परमात्मा को नहीं जानते वे उसे (स्वर्ग) को नहीं पा सकते। (रूगवेद-मंडल-1 सुक्त, 164, मंत्र 20-22)

स्वर्ग में संगीत और गीतों का आनंद उपलब्ध है। (ऋगवेद-10, 135/7, अर्थवेद 4,37/4)

'पवित्र नंदनवन" आदि सदाचारी लोगों के पर्यटन स्थल है, वहाँ भूख, प्यास, थकावट, ठंडी, गर्मी का कोई धोखा नहीं होता। वहाँ गंदगी वाली चीज नहीं होती। सुखदायक, सुगंधीवाली हवा बहती है। वहाँ के गीत कर्ण सुखदायी होते हैं। दु:ख, बुढ़ापा, कष्ट, शोक नहीं होते। वह दुनिया अपने कर्मों के परिणाम स्वरूप होती है। वहाँ रहनेवालों के ड्रेस मैले नहीं होते। दिव्य सुगंधित हार कभी सूख नहीं जाते। मत्सर, दु:ख, इर्ष्या, उनके पास नहीं पहुँच सकती। वे लोग मत्सर और छल-कष्ट से लिप्त नहीं होते।' (महाभारत 261:9-16)

श्रद्धा से दान करने वाले स्वर्ग में आते हैं। (अर्थवेद-9-5-18)

स्वर्ग प्राप्त करने के लिए केवल कर्म ही नहीं लेकिन शुद्ध अंत:करण भी होना आवश्यक है। (अर्थवेद-कांड-6 सुक्त-122, मंत्र-3)

2. शिव भगवानुवाच:-

'सतयुग में देवताओं का मान की तात ही नहीं। वहाँ पेट भरा रहता है। सोना ढूँढने की दरकार नहीं रहेगी। तुमको खोदना करना नहीं पडता। सतयुग में तुमको कोई परवाह नहीं। वहाँ तो सोना ही सोना है। ईंटे ही सोने की होती है।'

(साकार मुरली:- 01/01/1990)

'राजधानी स्थापन हो रही है सब एक जैसे हो नहीं सकता। राजाई में तो सब वैरायटी चाहिए। प्रजा को बाहरवाला कहा जाता है। यहाँ वजीर आदि की दरकार नहीं रहती। वहाँ तो तुम्हारी सब मनोकामनाएँ पूरी हो जाती है। सतयुग में थोड़े ही कोई रहमदिल करकर बुलायेंगे।'

(साकार मुरली:- 04/01/1990)

'वहाँ ईंट पत्थर का नाम नहीं होता। बिल्डींग बनती है उसमें भी सोने चाँदी के सिवाय और किचडपट्टी नहीं होती। वहाँ सायंस से बहुत सुख है।'

(साकार मुरली:- 07/01/1990)

'वास्तव में वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड है स्वर्ग।'

(साकार मुरली:-08/01/1990)

'सिर्फ एक सोमनाथ का मंदिर सोने का नहीं होगा और भी बहुतों के महल सोने के होंगे। सायंस जो अभी सीख रही है थोड़े वर्ष में बहुत होशियार हो जायेंगे, जिससे वहाँ बहुत अच्छी अच्छी चीजें बनेगी। वहाँ सबको अपनी खेती होगी। टेक्स आदि कुछ नहीं पड़ेगा। वहाँ अथाह धन होता है। जमीन भी ढेर होती है। नदियाँ तो सब होगी बाकी नाले नहीं होंगे।'

(साकार मुरली:- 09/01/1990)

'वहाँ पवित्रता के कारण आयु भी बड़ी होती है। आयु भी 150 वर्ष होती है। अपने समय पर एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। जो राज्य स्थापन करता हूँ वहाँ अकाले मृत्यु, दु:ख आदि कभी नहीं होता।'

(साकार मुरली:- 20/01/1990)

'राजाई पद पानेवाले की रहनी करनी ही अलग होगी। उनकी कथनी करनी एक होगी।'

(साकार मुरली:- 26/01/1990)

‘सतयुग में तो कोई प्रकार की गंद नहीं होती है। वहाँ रावण की चंचलता नहीं जो चलायमान हो। वहाँ तो योगी लाइफ रहती है। यह सब बीमारियाँ योगबल से खत्म हो जाती है।’

(साकार मुरलीः- 05/02/1990)

‘सतयुग में तो जानवर आदि फर्स्ट क्लास होंगे।’

(साकर मुरलीः- 07/02/1990)

‘इंग्लैण्ड, रशिया आदि कितने बड़े-बड़े हैं, सतयुग में नहीं थे। एक ही धर्म एक ही राज्य था।’

(साकर मुरलीः- 09/02/1990)

‘सतयुग में महल सोने के होंगे, दरवाजों पर भी जड़ीत लगे हुए होंगे।’

(साकार मुरलीः- 24/02/1990)

‘सतयुग और त्रेतायुग को गार्डन ऑफ फ्लावर कहा जाता है।’

(साकार मुरलीः- 05/01/2002)

‘सतयुग में भी स्कूल में जाते हैं। भाषा, धंधा-धोरी आदि सब सिखेंगे। वहाँ सब कुछ बनता होगा। सबसे अच्छे ते अच्छी चीज जो होनी चाहिए वह स्वर्ग में होती है। अच्छे ते अच्छी वस्तु मिलती है देवताओं को।’

(साकार मुरलीः- 08/01/2002)

‘अपने राज्य में प्रकृति के पाँचों ही तत्त्व भी सदा आज्ञाकारी सेवाधारी होंगे। प्रकृति और चैतन्य सेवाधारी आपके चारों ओर घुमते रहेंगे। ‘हाँ जी, मालिक’ - यह सदा मीठा-मीठा साज सुनाते रहेंगे।’

‘वहाँ ऐसे पंखे नहीं हिलायेंगे। वहाँ तो प्रकृति आपको पंखा करेगी। एक एक हीरा इतनी रोशनी देंगे जो आज की लाईट से वन्डरफुल लाईट होगी। सदा आपके महलों में नौ रंग के हीरों की लाईट होगी। नौ रंग की मिक्स लाईट कितनी बढ़िया

होगी। आपके महलों के आगे पीछे अनेक विमान खड़े होंगे। चलाने वाले का भी इन्तजार नहीं करना पड़ेगा। छोटे से छोटे बच्चे भी चला सकते हैं। बच्चा स्विच दबायेगा और उड़ेगा। एक्सीडेन्ट तो होना ही नहीं है। विश्वकर्मा ऑर्डर करेगा और महल और विमान तैयार। ईश्वरीय जादू के प्रालब्ध की नगरी होगी।'

(साकार मुरली:- 13/01/2002)

'लक्ष्मी-नारायण जब विश्व पर राज्य करते थे तो और कोई धर्म नहीं था, न कोई खण्ड था। एक ही भारत खण्ड था।'

(साकार मुरली:- 04/02/2002)

'सतयुग में फर्स्ट क्लास नेचुरल बयुटी रहती है। 5 तत्त्व सतोप्रधान होने से शरीर भी सुंदर होते हैं।'

(साकार मुरली:- 06/03/2002)

'राधे-कृष्ण अलग-अलग राजधानी के थे। स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण नाम पड़ता है।'

(साकार मुरली:- 08/03/2002)

'स्वर्ग में कोई बुरा काम होता नहीं क्योंकि वहाँ रावण राज्य ही नहीं है। इसलिए वहाँ कर्म अकर्म होते हैं।'

(साकार मुरली:- 23/04/2002)

'सतयुग में तो सुख, शान्ति, सम्पत्ति सब है। वहाँ कभी अकाले मृत्यु होती नहीं।'

(साकार मुरली:- 10/05/2002)

आने वाली दुनिया कैसी होगी?

(02/01/1980)

आज बाप-दादा कौन-सी सभा को देख रहे हैं? यह है साहबज़ादे और

साहेबज़ादियाँ सो भविष्य में शहज़ादे-शहज़ादियों की सभा। सच्चे साहब के बच्चे सब साहबज़ादे और साहबज़ादियों हैं। यह नशा सदैव रहता है। शहज़ादे वा शहज़ादियों के जीवन से यह जीवन पदमगुणा श्रेष्ठ है। ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें अपनी श्रेष्ठता को जानते हुए निरन्तर उसी खुमारी में रहते हो। आज वतन में बाप और दादा दोनों की रूह-रूहान चल रही थी कि साहबज़ादे और साहबज़ादियों का महत्व कितना बड़ा है। भविष्य जीवन के सर्व संस्कार इस जीवन से ही आरम्भ होते हैं। भविष्य में राज्यवंश होने के कारण, राज्य अधिकारी होने के कारण सदा सर्व-सम्पत्ति से सम्पन्न हर वस्तु में मालामाल, सदा राजाई की रॉयल्टी में हर जन्म बितायेंगे। सर्व प्राप्तियाँ हरेक के जीवन में चारों ओर सेवा प्रति चक्कर लगाती रहेंगी। आप लोगों को प्राप्ति की इच्छा नहीं होगी लेकिन सर्व प्राप्तियाँ इच्छुक होंगी कि मेरे मालिक मुझे कार्य में लगायें। चारों और वैभवों की खानें भर-पूर होंगी। हर वैभव अपना-अपना सुख देने के लिए सदा एवररेडी होंगे। सदा खुशी की शहनाईयाँ ऑटोमेटिकली बजती रहेंगी। बजाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। आपकी रचना वनस्पति अपने विश्व-पति के आगे पत्तों के हिलने से वैराइटी प्रकार के साज़ बजायेगी। वृक्ष के पत्तों का झूलना, हिलना भिन्न-भिन्न प्रकार के नैचुरल साज़ होंगे। जैसे आजकल अनेक प्रकार के साज़ आर्टीफिशल बनाते हैं वैसे पंछियों की बोलीं वैराइटी साज़ होगी। चेतन खिलौने के समान अनेक प्रकार के खेल आपको दिखायेंगे। जैसे आजकल यहाँ मनुष्य भिन्न-भिन्न प्रकार की बोलियाँ सीखते हैं मनोरंजन के लिए, वैसे वहाँ के पंछी भिन्न-भिन्न सुन्दर आवाज़ों से आपके इशारे पर मनोरंजन करेंगे। इसी प्रकार यह फल और फूल होंगे। फल ऐसी वैराइटी रसना वाले होंगे जैसे यहाँ अलग-अलग नमक, मीठा अथवा मसाला आदि डालकर रसना करते हो, वैसे वहाँ नैचुरल फल भिन्न-भिन्न रसना के होंगे। यह शुग़रमिल वगैरह नहीं होंगी लेकिन शुगरफल होगा। जैसी टेस्ट चाहिए वैसी नैचुरल फल से बना सकते हो। यह पत्तों की सब्जियाँ नहीं होगी लेकिन फल और फूल की सब्जियाँ होंगी। फूलों और फलों की सब्जियाँ बनायेंगे। दूध की तो नदियाँ होंगी। अच्छा अभी पियेंगे क्या? नैचुरल रस के फल अलग होंगे, खाने के अलग, पीने के अलग होंगे। मेहनत करके रस निकालना नहीं पड़ेगा। हरेक फल इतना भरपूर होगा जैसे अभी नारियल का पानी पीते हो ना। ऐसे

फल उठाया, ज़रा-सा दबाया और रस पी लिया। नहाने के लिए पानी होगा, वो भी जैसे आजकल का गंगाजल जिसका पहाड़ों की जड़ी-बूटियों के कारण विशेष महत्व हैं, कीड़े नहीं पड़ते हैं, इसलिए पावन गाया जाता है। वैसे वहाँ पहाड़ों पर ऐसे खुशबू की जड़ी-बूटियों के समान बूटियाँ होंगी तो वहाँ से जल आने के कारण नैचुरल खुशबू वाला होगा। इत्र डालेंगे नहीं लेकिन नैचुरल पहाड़ों से क्रास करते हुए ऐसी खुशबू की बूटियाँ होंगी जो सुन्दर खुशबू वाला जल होगा।

वहाँ अमृतबेले टेप नहीं उठायेंगे। नैचुरल पंछियों की आवाज़ ही साज़ होगी। जिस पर आप लोग उठेंगे। उठने का टाइम सवेरे ही होगा। लेकिन वहाँ थके हुए नहीं होंगे। क्योंकि जब चेतन देवताएँ जागें तब भक्ति में भी भक्त सवेरे उठकर जगाते हैं। भक्ति का महत्व भी अमृतबेले का है। जागेंगे सवेरे ही, लेकिन सदा ही जैसे जागती ज्योति हैं। कोई हार्ड वर्क हैं नहीं। न हार्ड वर्क है, न बुद्धि का वर्क है, न कोई बोझ है। इसलिए जागना और सोना समान है। जैसे अभी सोचते हो न कि सवेरे उठना पड़ेगा वहाँ यह संकल्प ही नहीं। अच्छा - पढ़ेंगे क्या? कि पढ़ने से छूटना चाहते हो? वहाँ की पढ़ाई भी एक खेल है। खेल-खेल में पढ़ेंगे। अपनी राजधानी की नालेज तो रखेंगे ना। तो राजधानी की नालेज की पढ़ाई है। लेकिन मुख्य सबजेक्ट वहाँ की ड्राइंग है। छोटा, बड़ा सब आर्टीस्ट होंगे, चित्रकार होंगे। साज़, चित्रकार और खेल। साज़ अर्थात गायन विद्या के संगीत गायेंगे, खेलेंगे, इसी में पढ़ाई पढ़ेंगे। वहाँ की हिस्ट्री भी संगीत और कविताओं में होगी, ऐसी सीधी-सीधी बोर करने वाली नहीं होगी। रास भी एक खेल है ना। नाटक भी करेंगे, बाकी सिनेमा नहीं होंगे। नाटक होगा। नाटक हँसी के मनोरंजन के होंगे। नाटकशालायें काफी होंगी। वहाँ के महलों के अन्दर भी विमानों की लाइन लगी होगी और विमान भी चलाने के बहुत सहज होंगे। एॅटामिक एनर्जी के आधार पर सब काम चलेगा। यह आप लोगों के कारण लास्ट इन्वेन्शन निकली है।

करेन्सी में अशर्फियाँ होंगी। लेकिन आजकल जैसी नहीं होंगी। रूप-रेखा परिवर्तित होगी। डिज़ाइन और अच्छी-अच्छी होंगी। निमित्त मात्र लेन-देन होंगी। जैसे यहाँ मधुबन में परिवार होते हुए भी चार्ज वाले अलग-अलग बनाये हुए हैं ना। अलग-अलग डिपार्टमेंट बनाए हुए है। परिवार होते भी चार्ज वाले से लेते हो ना।

एक देता है दूसरा लेता है। ऐसे वहाँ भी फैमिली सिस्टम होगा। दुकानदार और ग्राहक का भाव नहीं होगा। मालिकपन का ही भाव होगा। सिर्फ आपस में एक्सचेन्ज करेंगे। कुछ देंगे कुछ लेंगे कमी तो किसी को भी नहीं होगी। प्रजा को भी कमी नहीं होगी। प्रजा भी अपने शरीर निर्वाह से पदमगुणा भरपूर होगी। इसलिए मैं ग्राहक हूँ, यह मालिक है - यह भाव नहीं रहेगा। स्नेह की लेन-देन होगी। हिसाब-किताब की खींचातान नहीं होगी। रजिस्टर नहीं होंगे।

रतन जड़ित के साज़ होंगे। नैचुरल साज होंगे। मेहनत वाले नहीं होंगे। अंगुली रखी और बजा। ड्रेस तो बहुत अच्छी पहनेंगे। जैसा कार्य होगा वैसी ड्रेस होगी। जैसी स्थान वैसी ड्रेस। भिन्न-भिन्न ड्रेस पहनेंगे। श्रृंगार भी बहुत प्रकार के होंगे। भिन्न-भिन्न प्रकार के ताज़ होंगे, गहने होंगे। लेकिन बोझ वाले नहीं होंगे। रूई से भी हल्के होंगे। रीयल गोल्ड होगा और उसमें हीरो ऐसे होंगे जो भिन्न-भिन्न रंग की लाइट्स हर हीरे से नज़र आयेंगी। एक हीरे से 7 रंग दिखाई देंगे। यहाँ भिन्न-भिन्न रंग की ट्यूब्स लगाते हो ना। वहाँ हीरे ही भिन्न-भिन्न रंग के ट्यूब्स मुआफिक चमकेंगे। हरेक का महल रंग-बिरंगी लाइट से सजा हुआ होगा। जैसे यहाँ अनेक आइने रखकर एक चीज़ अनेक रूप में दिखाते हो ऐसे वहाँ की जवाहरात ऐसी होगी जो ऊपर की सीन एक के बजाए अनेक रूप में दिखाई देगी। सोने की लाइट और हीरों की लाइट अर्थात चमक दोनों के मेल से महल जगमगाता हुआ नज़र आयेगा। सूर्य की किरणों से हीरे और सोना ऐसे चमकेंगे जैसे हज़ारों लाइट्स जल रही हैं। इतनी तारों (वायर्स) आदि की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। बहुत सुन्दर प्रकार के आजकल की राजाई फैमली में बिजलियों की जगमग देखते हो, भिन्न-भिन्न प्रकार की लैम्पस की डिज़ाइन देखते हो। वहाँ रीयल हीरों के होने के कारण एक दीपक अनेक दीपकों का कार्य करेगा। ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। सब नैचुरल होगा।

भाषा तो बहुत शुद्ध हिन्दी ही होगी। हर शब्द वस्तु को सिद्ध करेगा - ऐसी भाषा होगी। (विदेशियों को) आपकीर इंगलैण्ड और अमेरिका कहाँ जायेंगे? वहाँ महल नहीं बनाना। महल तो भारत में बनाना। वहाँ सिर्फ घूमने के लिए जाना। वह पिकनिक के स्थान, घूमने के स्थान होंगे। वह भी थोड़े-बहुत होंगे, सभी नहीं। विमान शुरू किया और आवाज़ से भी पहले पहुँच जायेंगे। इतनी तेज़ स्पीड विमान

की होगी। जैसे फोन में बात करते हो ना, इतना जल्दी विमान से पहुँच जायेंगे। इसलिए फोन करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। विमान भी फैमली के भी होंगे और एक-एक के भी होंगे। जिस समय जो चाहिए वह यूज़ करो। अब बैठ गये विमान में। अभी सतयुगी विमान छोड़कर बुद्धि के विमान में आ जाओ। बुद्धि का विमान भी ऐसी स्पीड वाला है? संकल्प की स्पीड का है? संकल्प किया और चाँद और सितारों से भी परे अपने घर पहुँच गये। ऐसे बुद्धि का विमान सदा एवररेडी है? सदा विघ्नों से परे है? जो किसी भी प्रकार का एक्सीडेण्ट न हो। जाना चाहें परमधाम में और धरती को ही छोड़ न सकें या और कोई पहाड़ी से टकराकर गिर जाएँ। व्यर्थ संकल्प भी एक पहाड़ी से टकराना है। तो एक्सीडेंट से परे एवररेडी बुद्धि का विमान है? पहले इस विमान पर चढ़ेंगे तब वह विमान मिलेगा। ऐसे एवररेडी हो? जैसे स्वर्ग की बातों में हाँ-हाँ करते रहे वैसे इन बातों में हाँ-हाँ नहीं करते हो।

आज वतन में स्वर्ग का नक्शा निकाला था, इसलिए आप लोगों को भी सुनाया। ब्रह्मा बाप तैयारी कर रहे हैं ना स्वर्ग में जाने की तो स्वर्ग के नक्शे निकाल रहे हैं। आप सब तैयार हो ना? तैयारी कौन-सी है वह तो मालूम है ना? कौन बाप के साथ स्वर्ग के गेट से पास करेंगे। उसकी पास ले ली है? गेट-पास तो ले ली हैं लेकिन बाप के साथ गेट पास करने की पास हो। एक वी.आई.पी.गेट पास होती है और एक राष्ट्रपति की भी पास होती है। यह विश्वपति की गेट पास है। कौन-सी गेट-पास ली है? अपने पास का चेक करना।

3. 'सतयुगी राजधानी का दिव्य दर्शन' - गुलजार दादीजी

''स्वर्ग वो दुनिया है वहाँ जो भी हम समझते वो सब अच्छे ते अच्छा है। जैसे की अपना शरीर है। तो शरीर में कोई डिफेक्ट नहीं कोई भी अंग नीचे ऊपर नहीं। स्वर्ग में किसी के भी अंग लंबा चौडा, टेढा मेडा नहीं होता। आजकल की फेशन वहाँ नहीं है। नेचुरल ब्युटी है, वहाँ देवताओं के शरीर विकार से पैदा नहीं होते हैं वो तो योगबल से पैदा होते हैं। तो जैसा बीज होगा वैसा शरीर होगा। आत्मा सम्पूर्ण तो शरीर भी सम्पूर्ण मिलेगा।

तन सम्पूर्ण है तो मन में भी कोई अशान्ति नहीं है। खुशी का आधार प्राप्ति है।

वहाँ कोई उठाने नहीं आता है, आपेही आँखें खुल जाती है। थकावट होती नहीं। बोझ का कार्य है ही नहीं। क्लास में जाना है, दफ्तर में जाना है - ऐसी जिम्मेवारी वहाँ नहीं है। इसलिए वहाँ रेस्ट की लाइफ है। कोई भाग दौड़ नहीं है। मन एकदम शीतल और शरीर भी एकदम आराम से कार्य करेगा। यहाँ टाइम पर कार्य करने की जिम्मेवारी है। लेकिन वहाँ स्वत: ही टाइम पर कार्य होगा।

अमृतवेले उठते जरूर है। वायु ऐसी चलती और वृक्ष के जो पत्ते हैं वो ऐसे हिलते है और पत्तों का आवाज इतना मीठा निकलता है। पक्षी भी 9का का" आवाज नहीं करेगा। वो बोलते ऐसे जैसे गीत गाते हैं, और जैसे साज बजाते है वैसे मीठा लगता है। वो आवाज तना प्यारा लगता है कि समय होते ही आपेही आँखें खुल जाती है। जैसे ही आँखें खुलती है तो यहाँ के माफीक चार बज गये हैं अब उठो भागो ऐसे नहीं है। ठीक समय पर आराम से उठकर बड़े प्यार से बैठे रहेंगे। पाँच मिनट बैठकर उठते हैं। बेफिकर लाइफ है, खुशी है, प्राप्ति है। अमृतवेले उठेंगे फिर तैयार वगैरे होकर घुमने जायेंगे। सैर तो अच्छी लगती ही है। दासीयाँ इतनी होती है लेकिन वहाँ इतना काम नहीं होता है। जैसे यहाँ नोकर थके हुए लगते हैं। संख्या बहुत है और काम नाम मात्र है। परिवार भी बड़ा नहीं होता है। वहाँ संख्या पद के आधार पर है, जितना बडा विश्व-महाराजन होगा उतनी दासियाँ होगी। एक एक काम के लिए एक एक दासी होगी। कोई कपडे संभालने वाली तो कोई नहाने की सामग्री तैयार करने वाली। कोई खेल कराने वाली तो कोई श्रृंगार कराने वाली।

श्रृंगार करके घुमने जाते हैं। विमानों में चढ़कर जाने की दरकार नहीं। विमानों की संख्या बहुत है। हरेक के पास ढ़ेर विमान होंगे। हरेक टाइम के अलग अलग विमान होंगे। कोई फंकशन में जाने का विमान बहुत बढ़िया होगा। विमान दो के लिए, चार के लि। छे के लिए, पार्टी के लिए अलग अलग रंग का होगा। विमान का शेप भी भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। कोई पंछी का, कोई पुष्प की डिजाइन का होता है। विमान चलाने की विधि एकदम आसान होती है। एक बटन दबाया तो चल पडेगा। दूसरा बटन दबाया तो दिशा चेन्ज होगी। छोटे छोटे बच्चे भी चला सकते हैं। चलाने में एकदम आसान होगा। यहाँ की जो लास्ट में सिम्पल इन्वेन्शन होगी उसका ही रूप वहाँ है।''

व्यवस्थापन और प्रशासन

1. मूल्याधारित व्यवस्थापन

उचित व्यवस्थापन एक ऐसी कला है जो बिगड़ी हुई व्यवस्था को परिवर्तन करने की क्षमता रखती है। आज कलियुग के अंत में भी व्यवस्थापन के कुछ तरीकों को अपनाकर भी लोग कुछ हद तक अपने व्यवहार का व्यवस्थापन कर लेते हैं। जबकि आज के व्यवस्थापन में व्यवस्थापक स्वयं ही कई बुरी आदत, स्वभाव, जिम्मेवारी का बोझ, सफलता की चिंता इन कमियों के परवश है। परंतु इन सबको मेनेज करते हुए जब वह सभी को व्यवस्थापित करना चाहता है तो हर व्यक्ति की व्यक्तिगत स्तर पर वही सारी कमियाँ जो व्यवस्थापक के साथ लागू होती है उभर आती है..... ऐसे समय पर नियम या कायदा दिखाकर हम व्यवस्थापन तो कर लेते हैं लेकिन क्या उससे व्यक्ति की कार्यक्षमता का पूर्ण उपयोग होता है। उसे कार्य की संतुष्टि प्राप्त होती है? उसके कार्य से उसे तथा अन्य को सुख मिलता है? दो अपना कार्य पूर्ण रूचि से करता है या मजबूरी से? इन प्रश्नों के उत्तरों को जितना गहराई से ढूँढते चले जाते हैं हम महसूस करते हैं कि कायदों से व्यक्ति की मनोवृत्तियाँ नहीं बदली जा सकती....।

और सुचारूर व्यवस्थापन के लिए व्यक्ति की मनोवृत्ति सतोप्रधान एवम सकारात्मक होना अति आवश्यक है। इसलिए आज के व्यवस्थापन सहित सभी क्षेत्रों की समस्याओं का कारण है हमारा दिन-प्रतिदिन गिरावट में आता जा रहा नैतिक स्तर। मानवीय मूल्यों से हमारा बेबनाव, स्वार्थ से भरा हुआ विवेक और सर्वनाश की ओर ले जा रहा अहंकार......।

नि:संदेह अगर संसार का हर मानव प्रेम, सदचरित्रता, नि:स्वार्थता, परोपकार, पवित्र स्नेह, सत्यता जैसे नैतिक मूल्यों को सच्चे मन से अपना ले तो संसार की समस्याओं का समाधान दूर नहीं...... स्वर्णिम संसार की व्यवस्था दूर नहीं या ये कहे कि यही श्रेष्ठतक व्यवस्थापन की नींव है। अगर व्यवस्थापन के क्षेत्र में व्यक्तिगत स्तर पर नैतिक मूल्यों को हर व्यक्ति धारण करें तो व्यवस्था का रूपांतरण एक

सुंदर माहौल में हो सकता है।

सतयुग में तो सभी मानव अपने नैतिक मूल्यों के स्तर पर उच्चतम अवस्था में होते हैं.... । हर एक अपने कार्य को पूर्ण जिम्मेवारी से करता है, मैं कुछ कर रहा हूँ - इस भावना से ऊपर हर एक के मन में अपने कार्य प्रति पूर्ण श्रद्धा होती है और सभी अपने-अपने कार्यों को उचित तरीके से आनंदित होकर संपन्न करते हैं। वहाँ कार्य करते वक्त सभी सरल और हल्के रहते हैं। जैसे आज व्यक्ति अपने परिवार के प्रति जिम्मेवारी निभाने अर्थ कार्य तो करता है किन्तु उसके मन से 9मैं कोई उपकार कर रहा हूँ" यह भाव नहीं होता। ऐसे वहाँ भी विश्व ही हमारा परिवार है - यह भाव रहते हुए व्यक्ति हदों से ऊपर उठकर सहज भाव से कार्य करता हे। जैसे एक परिवार में माँ अपने कर्तव्य को निभाने वक्त हल्के दर्जे का समझा जाने वाला कार्य भी बड़े प्रेम से अपनत्व के भाव से पालना के कर्तव्य भाव से करती है। उसमें कोई लेन-देन का हिसाब-किताब या ऊँच-नीच, छोटे-बड़े का भेदभाव नहीं होता। ऐसे वहाँ भी हर व्यक्ति अपनत्व की भावना से अपना कर्तव्य समझ पूर्ण जिम्मेवारी से सहजभाव से आनंदित होकर अपना कार्य करेगा। इसलिए कार्य से उसके आनंद में वृद्धि होगी न कि तनाव या थकावट का अनुभव.....। जो कि सर्व श्रेष्ठ व्यवस्थपन का प्रैक्टिकल प्रमाण होगा....

आओ व्यवस्थापन के कुछ पहलुओं पर विचार करें.....

2. आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा मूल्याधारित व्यवस्थापन

परिभाषा:-

- ➪ मेरी पार्कर फॉलेट के अनुसार, 'व्यवस्थापन एक कला है जिसके आधार से व्यक्तियों के जरिए से कार्य सम्पन्न किये जाते हैं।'
- ➪ हरोल्ड कून्झ ने इसे सुधारते हुए कहा, 'व्यवस्थापन यह व्यक्तियों के फॉर्मल समूहों द्वारा कार्य सम्पन्न किए जाने की कला है।'
- ➪ व्यवस्थापन का मतलब आइडिया, वस्तु और व्यक्तियों से है, आइडिया माना विचार, भाव तथा मत।

व्यवस्थापन का पात्र

➪ व्यवस्थापन को जो भी कार्य करते होते हैं उनके लिए कार्यप्रणाली तैयार करनी होती है। इसके अन्तर्गत ऑब्जेक्टीव तथा पॉलिसीज को बनाया जाता है जिन्हें फिर सशक्त कार्य प्रणाली द्वारा कार्यन्वित किये जाने की जरूरत है।

➪ व्यवस्थापन को यह जरूरी है कि सभी कार्य सुचारू रूप से और अनुशासन से संपन्न करें। इसके लिए फिर चाहिए कर्तव्यों को प्रदान करना, अधिकार का उत्तरदायित्व सौंपना तथा विवरणात्कम नतीजों का उत्पादन करना।

गुणवत्तायें

➪ समय का व्यवस्थापन, वातावरण ॲनालिसीस, प्रभावी दूरसंचार, नए नेतृत्व का निर्माण, ऑर्गेनाइजेशनल क्रियेटीविटी, सशक्तिकरण तथा डेलिगेशन, अीम डिलींग, भविष्य नियोजन व्यवस्था।

व्यवस्थापन में अच्छे नतीजों के लिए पर्याय नहीं, परंतु अति आवश्यक

वर्तमान समय में कंपनियों के सामने जिन प्रश्नों का उदगम हुआ है। उनके लिए प्रभावी सुलझाव तभी हो सकता है जब हम अपने आंतरिक स्त्रोत का व्यवस्थापन करते हैं और अपनी आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित करते हैं। आध्यात्मिकता आज के व्यवस्थापन का पर्यायी पूर्जा नहीं परंतु अनिवार्य घटक है। आध्यात्मिक शक्तियों का विकास जैसे कि सहनशलता, दूसरों का सुन लेने की क्षमता, उपस्थितता तथा समाने की शक्ति का अभ्यास - यही मूल औजार है एक यशस्वी व्यवस्थापन में। ईमानदारी, इनटेग्रीटी और भ्रष्टाचाररहित चरित्र ये देश का उत्तुंग शिखरों तक नेतृत्व कर सकता है।

➪ एक उपयुक्त कार्य के लिए वातावरण का निर्माण करना, जिसमें व्यक्ति सौंपे गये कार्य को प्रभावी रूप से संपन्न कर सके।

➪ एक शुभभावना, विश्वास और चुनौतियुक्त वातावरण निर्माण करना।

➪ लोगों को अपने कार्य संमन्न करने के लिए योग्य मौकों का प्रदान करना।

➪ टीम स्पिरिट में बढौत्री, प्रभावी नेतृत्व तथा उत्तम दूरसंचार व्यवस्था की आवश्यकता है।

➪ कार्य से जुड़े साथियों के सहभाग की देख-रेख करने के लिए प्रभावी प्रणाली चाहिए।

व्यवस्थापन एक सुकुलित ताकत है

संगठन के हरेक सदस्य के पुरुषार्थ को संगठित करके सुचारू रूप से संचालन करने में ही व्यवस्थापन का यथार्थ गर्भार्थ है।

व्यवस्थापन व्यक्तिगत उद्देश्य के साथ सम्मिलित करता है। व्यवस्थापन यह एक ऐसी एकत्रिकरण शक्ति है जिसमें प्राप्त पूर्णता इतनी ज्यादा होती है जो छोटे-छोटे संयोगों के एकत्रिकरण से भी इतनी नहीं हो पाती। वह मनुष्य शक्ति तथा उपलब्ध अनेक स्त्रोतों का समन्वय करती हैं। व्यवस्थापन एक सुचारू प्रक्रिया है जिसमें पूर्जे संकलित किए जाते हैं... बेहतर नतीजे के लिए...

सहकार:- समझने के लिए आसान है। परंतु कॉर्पोरेट दुनिया में व्यवस्थापक कभी-कभी यह बात भूल जाते हैं कि वे भी उसी तत्त्व के बने हैं जिनसे बाकी सारे कर्मचारी भी बने हुए हैं। इस रीति से यह सहकार की जो शक्ति है यह व्यवस्थापक को औरों के जीवन को समझने की प्रेरणा देती है जिससे इनके संबंध में सकारात्मक परिवर्तन आता है। फल स्वरूप उनका संगठन संयुक्त हो जाता है। सहकार और मदद में अंतर है। सहकार माना दूसरों के साथ कार्य करना न कि उनको सिर्फ मदद करना।

व्यवस्थापन एक संगठित प्रक्रिया

समान उद्देश्य को पाने के लिए सभी ने एकत्रित मेहनत करना, यह व्यवस्थापन में सम्मिलित है। यह अपने आप में एक विशेष कार्य है जिसमें कार्य करने के बजाए कैसे कराये जायें इस पर जोर दिया जाता है। व्यवस्थापन मनुष्यों के संगठित कार्य के अन्तर्गत व्यक्ति व्यवहार पर ज्यादा महत्व केन्द्रित करता है।

एकता:- एकता की नींव है। एक संयुक्त दृष्टांत, एक आशा धारण करना, एक सर्व कल्याणकारी उद्देश्य तथा सभी के भले के लिए किया गया कार्य। एकता

से पालना मिलती है, बल मिलता है और नामुमकिन को मुमकिन करने की हिम्मत मिलती है। एकता के साथ दृढ़ता और निरंतरता है तो बड़े से बड़े कार्य भी आसान लगता है।

संचालनः- संचालक के ऊपर राजकारण का दबाव, वरिष्ठों का दबाव, परिवार वालों का दबाव, कनिष्ठों का दबाव तथा साथियों का भी दबाव हो सकता है। इसके अलावा ऊँचे-ऊँचे लक्ष्यों को हाँसिल करने की चिंता भी उसको रहती है। इसका सारा प्रभाव उसके मन पर ज्यादा बोझ डालता है न कि उसके कार्य पर। इसलिए एक संचालक को बहुत जरूरी है कि अपने मानसिक और भावनात्मक संतुलन को बनाए रखें, व्यक्तिगत और संगठन के एकता को बनाये रखें। संचालक एक नई दुनिया की रचना करने के कार्य में चार चाँद लगा सकते हैं। अगर वे अन्य लोगों से मिलते वक्त नम्रता बरतते हैं, डिवाइन समझदारी और मानवता और अपने आपको मदद और सहयोग की भावना के सेवक समझते हैं, तो इस कार्य में, बेशक मनुष्य स्वभाव का ज्ञान रहना बड़ा आवश्यक है, परंतु शायद सबसे महत्वपूर्ण बात हे स्व के स्वभाव पर पूर्ण स्वामित्व। क्या यह संभव है कि आप लम्बे समय तक अपने कर्मचारी तथा स्टाफ से सहयोग प्राप्त कर सकेंगे, अगर आपके खुद के मन और बुद्धि या भावनायें तथा मनोबल या बुद्धि, दिल और हाथ एक दो को सहयोग नहीं देते हैं? हम दूसरों के ऊपर कोई अधिकार तक तक नहीं दर्शा सकते, जब तक स्वयं के कर्मेन्द्रियों पर संकल्पों तथा भावनाओं पर पूरा नियंत्रण नहीं है।

निर्णय करना व्यवस्थापन का एक अनिवार्य घटकः- सारे व्यवस्थापन तंत्र कं अन्तर्गत, 'निर्णय करना', यह एक अनिवार्य घटक है क्योंकि व्यवस्थापन के हर कदम पर निर्णय लेने होते हैं। हर व्यवस्थापक के कार्यभाग का एक जरूरी हिस्सा, 'निर्णय करना' है। व्यक्ति चर्चा अच्छी तरीके से कर सकेगा, परंतु बिना निर्णय शक्ति के, जो कि वास्तव में अपने सपनों को हाँसिल करने के लिए एक मूलभूत कदम है, यह ——— की शक्ति कोई काम की नहीं है। इस शक्ति को सही ढंग से उपयोग में लाने के फल स्वरूप जीवन का मार्ग स्वच्छ बनता है और अन्य लोगों के लिए प्रेरणादायी बन जाता है। यह शक्ति —-- के —-- में ही कार्य

करती है।

3. अष्ट शक्तियों का निर्णय लेने में उपयोग:-

स्व-परिक्षण:- निर्णय लेने से पहले, व्यवस्थापक एक या दो मिनट मौन में रहे, अथवा ध्यान करें। यदि निर्णय औरों के साथ मिलकर लेना हो तो तीन और शक्तियों की जरूरत पड़ेगी। ऐसे समय व्यवस्थापक को यह मालूम होना चाहिए कि, कौन-सी शक्ति का उपयोग कहाँ हो सकता है।

सहनशक्ति:- यह शक्ति व्यवसीापक को अपने विरोधकों के प्रति उपयोग में आती है। व्यवस्थापक ने अपने विरोधकों का आदर और प्रशंसा करनी चाहिए। उन्हें अपने विचार और सलाह देने के लिए आमंत्रित व प्रोत्साहित करना चाहिए। ऐसे करने से थोड़े ही समय में विरोध का परिवर्तन सहकार्य में हो जायेगा।

सहकार शक्ति:- इस शक्ति से व्यवस्थापक को बड़ा आधार मिलता है। यह सहकार शक्ति उसे उसके सहकारीयों से मिलेगी। व्यवस्थापक ने किसी भी विचार के प्रति अपने सहकारियों से सलाह-मशवरा करना चाहिए। अपने सारे निर्णय व प्राप्तियाँ अपने सहकारियों के साथ बाँटनी चाहिए। इस शक्ति द्वारा व्यवस्थापक को पूरे परिस्थिति का ब्योरा रखना हे। उसे अनुमान होना चाहिए कि उसके किसी एक निर्णय से कंपनी को कितना फायदा होगा तथा दूसरें लोगों पर उसका क्या परिणाम होगा।

समाने की शक्ति:- समाने की शक्ति उन्हीं के प्रति उपयोग में लायी जाती है जो व्यवस्थापक के विरोध में न हो और ना ही उनके पक्ष में हो। ऐसे लोगों को व्यवस्थापक ने सूनना है और उनके विचारों को प्रोत्साहित करना है। यदि वे लोग लोगों के सामने बोलना नहीं चाहते तो उनसे व्यवस्थापक ने एकान्त में बात करनी चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण है उन लोगों का व्यवस्थापक ने आदर करना, उनका मान रखना।

निर्भयता और निर्मलता:- सही निर्णय लेने के लिए निर्भयता और निर्मलता की बहुत जरूरत है।

समेटने की शक्ति:- एक बार निर्णय हो जाने के बाद व्यवस्थापक ने पूरी

योजना को अंतिम स्वरूप देकर शान्त हो जाना है, अर्थात उस निर्णयसे जुड़े सभी विचारों को समेटना है और शान्त रहना है।

सामना करने की शक्ति:- निर्णय लेने के बाद, व्यवस्थापक को होने वाले परिणामों का सामना करना है। चाहे वे परिणाम अच्छे हो या बुरे। किसी भी विरोध के लिए तैयार रहना है। निर्णय को कृति में लाने के लिए सहनशक्ति, समाने की शक्ति तथा सहकार-शक्ति को उपयोग में ला सकते हैं।

डेलिगेशन और जिम्मेवारी, नियुक्ति:- नियुक्ति, व्यवस्थापन का एक मजबूत आधार है तथा एक अच्छे व्यवस्थापन का सार है। नियुक्ति कि वजह से किसी भी कार्य के जिम्मेवारी नियुक्त किए गए व्यक्ति पर होती है। तथा जिम्मेवरी का आधार भी नियुक्त किए गए व्यक्ति पर होता है।

स्व-परिक्षण:- स्व-परिक्षण माना अपने स्व में अथवा अपने अंदर झाँकने की कोशिश। किसी भी कार्य व व्यस्त दिन आरंभ करने से पहले यह बहुत जरूरी है। इसका परिणाम यह होता है, कि हमें अंदर से बहुत शान्त और सुख महसूस होता है। इसकी वजह से हमारी बुद्धि स्वच्छ रहती है और किसी भी निर्णय को सहजता से ले सकती है। स्व-परिक्षण द्वारा हम खुद में शक्ति भरकर औरों के साथ कार्य करने में सक्षम होते हैं।

सहनशक्ति:- यह शक्ति लोगों के साथ व्यवहार करने में उपयोगी होती है। किसी भी स्थिति के लिए यह एक स्वाभाविक प्रतिसाद है, न कि प्रतिक्रिया। जैसे एक पेड अपने फल सभी को देता है, उसे भी जो उसे पत्थर मारता है, उसी तरह सहनशक्ति द्वारा हम हर एक व्यक्ति को उसे जो चाहिए वह दे सकते है। इसका परिणाम यह होता है कि लोग तुम्हें तंग नहीं करेंगे, लेकिन आपसे सलाह-मशवरा (राय) करेंगे।

4. राजतंत्र

याने सबके लिए एक 'धारणा'। जैसे विश्व ईसाई संध में एडवर्ड-1, एडवर्ड-2, और एडवर्ड-3 हैं, वैसे ही स्वर्णयुग में वहाँ पे श्री लक्ष्मी और श्री नारायण। पहले, दूसरे, तीसरे से आठवें वंश तक होंगे। स्वर्णयुगीन विश्व की परमात्माने दी हुई राज्य

सत्ता स्थिर और अचल होती है। और उसे कोई भी छिन नहीं सकता। कोई लुट नहीं सकता। उधर सिर्फ एक भाषा, एक धर्म और एक बादशाह की सत्ता होती है। श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का पूरी वसुंधरा, आकाश और समुंदर पर अधिपत्य होगा। उनके शासनकाल में कोई भी नैसर्गिक दुर्घटना नहीं होगी। धन्य भण्डार हमेशा धान्य से भरे पड़े होंगे। सतयुग में राज्य की सत्ता चलाने के लिए हर एक को जरूर लड़का और एक लडकी होगी। मधुरता ही राजा का मुख्य गुण होगा।

5. एडमिनिस्ट्रेशन

आज राज्य विस्तार की सीढ़ी पर इस प्रकार है। पहले अपने राज्य बाद में परिवार में जिस समाज में रहना है उसी पर राज्य फिर वही शहर या छोटे इलाके में राज्य और अंत में वही बडे विस्तार के प्रदेश पर जिसको देश कहते हैं उसी में राज्य। इस प्रकार से पाँच कम पर पूर्ण रूप में साम्राज्य होता है।

सतयुग में प्रशासनकर्ता सतोप्रधान हैं। राज्य कारोबार भी श्रेष्ठ हैं। स्वर्णिम दुनिया में सभी एक राजा के हुक्म पर चलते हैं। वहाँ बादशाह में पूरी ताकत रहती है। इसलिए कोई वजीर आदि नहीं होते हैं। हरेक को अपनी अपनी राजधानी। महारजा एक होगा, छोटे दूसरे राजाएं होंगे। वहाँ पर किसी का कोई पर्सनल सेक्रेटरी नहीं होता है क्योंकि देवताओं को किसी के राय की दरकार नहीं होती। जैसे-जैसे युग परिवर्तन होता जाता है देवताओं की गिरती कला होने लगती है तब द्वापर युग में राय लेने की वजीर रखने की आवश्यकता महसूस होती है।

स्वर्णिम युग का सारा कारोबार सत्यता के आधार पर ही चलता है। हर कार्य सहज (स्मुथली) और प्रभावता (इफेक्टीवली) से चलता है। इसलिए वहाँ कोई आश्वासन मंत्री वा नेता नहीं होंगे।

वहाँ दरबार बहुत बडी होती हैं। सब राजे-रजवाडे आपस में मिलते हैं। जैसे स्नेह मिलन होता है। इस सभा में छोटे-छोटे राजाओं को, उनके परिवार वालों को बुलाया जाता हैं। साहुकारों को ऐसी सभा में कभी कभी आमंत्रण देंगे।

वहाँ राज और प्रजा के बीच में स्नेह का अटूट संबंध हैं। इसी कारण भारत के प्राचीन शास्त्रों में वर्णन है कि प्रजा अपने पास से जो ज्यादा धन-सम्पत्ति या तो अन्न

आदि होता था, वह ऐसे ही प्रेम भाव से राजा के धन भण्डार में या अन्न भण्डार में रखकर आती थी और राजा वही धन भण्डार या अन्न भण्डार प्रजा के कार्य में लगाता था।

वहाँ रॉयल फैमिली को जरूरत नहीं होगी। प्रजा को कमाना पड़ेगा लेकिन उसमें भी नम्बर है। कोई साहुकार प्रजा कोई साधारण प्रजा। साहुकार प्रजा को ज्यादा कमाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। परंतु यह कमाई करना भी एक भाव से होता है। वह कोई स्वयं को हीनता की नजरों से नहीं देखेंगे। गरीब तो वहाँ होते ही नहीं।

सतयुग में आयु साधारण 150 वर्ष की होती है। 150 वर्ष की आयु में मानव अनेक बातें सीखेंगे। उसी कारण समाज सयाना और समझदार होता है और राज्य अधिकारी भी इतने समझू और अनुभवी होंगे और उसी कारण राज्य व्यवस्था अच्छी होती हैं।

सतयुग में नया-नया राज्य होने के कारण अनेक बातों का निर्णय करना होता है। जैसे आज की सृष्टि में अनेक बातों में उलझन आती हें तो वहाँ पर मीठी उलझनें आएगी। जैसे महल ऐसा हो या ऐसा... मुकुट की डिझाइन कैसी हो... आज भोजन पर किसको निमंत्रण दें? इत्यादि...।

वहाँ पर कोई कर (टेक्स) निर्धारण की प्रथा नहीं होगी। हरेक के पास जरूरत से ज्यादा धन सम्पत्ति होगी, तो एक दूसरे को सौगात के रूप में धन अथवा वस्तु भेंट करेंगे। वहाँ की अर्थ व्यवस्था दान की भावना से भी ऊँच एक परिवार की भावना के आधार पर चलता हे। और परिवार के अन्दर प्रशासन इस प्रकार का होता है कि प्रत्येक अपनी-अपनी फर्ज अदाई के रूप में कार्य करता है और उसी कारण परिवार में आपसी प्रेम-प्यार, श्रद्धा हैं। स्वर्णिम दुनिया में कोई अन्तिम क्षण तक कारोबार नहीं करेंगे। विश्व महाराजन स्वयं ही अपने उत्तरदायित्व को गद्दीनशीन करके राज्य कारोबार के अनेकानेक पहलुओं की शिक्षा और समझ देंगे।

6. राजनीति

शुरू में वहाँ जो राज्य स्थापित होता है वह सर्व कला सम्पूर्ण दो व्यक्तियों

द्वारा चलाया जाता है। जिनके दिल में सारी प्रजा के लिए बेहद प्यार होता है। यह दोनों ही वहाँ के सम्रात और सम्राज्ञी होते हैं। प्रारंभ में लोक संख्या 10 लाख से भी कम होती है। यह शाही साम्राज्य 8 पिढ़ीयों तक चलता है। यहाँ आत्मा के योग्यता के अनुरूप उसे पद और सम्मान मिलता है। इसलिए वे सारे परिपूर्णता और शान्ति महसूस करते हैं। वैसे तो वहाँ सब समान होते हैं। सिर्फ गुणों के अनुसार उनकी वहाँ की सरकार में पद सन्मान होता है।

यह साम्राज्य जो सम्राट और सम्राज्ञी द्वारा चलाया जाता है। इसे भौगोलिक विषेषता और गुणो के अनुसार बाँटा जाता है। लेकिन वहाँ कोई औपचारीक सीमा रेखाएं या आने जाने पर रोक-टोक नहीं होती। क्योंकि सारा साम्राज्य ही एक सम्राट के अधीन होता है। राज्यकर्ता शाही घराने के 16000 से भी ज्यादा सदस्य होते हैं। जो सारे मिलकर इस बात का विशेष ध्यान रखते है कि सरलता से और समानता से चले।

सम्राट और सम्राज्ञी अपनी सारी प्रजा को अपने बच्चों की दृष्टि से देखते हैं। और सब के साथ समान व्यवहार और वर्ताव होता है।

राजा को जो राज दरबार होता है यह एक तरह से सारे लोग आपस में मिल सके इसका एक जरीया होता है। वहाँ वे कोई शिकायतें या कठीनाईयों पर चर्चा नहीं करते। बल्कि उनके राज्य विभाग के विशेषताओं का आपसी तौर पर कैसे लाभ उठाया जाय यही चर्चा का विषय होता है।

वर्तमान परिस्थितियों में समाज में विषमता निर्माण होने का एक प्रमुख कारण है राजनैतिक पक्षों में विषमता, नेताओं ने अपने लोगों के अंदर राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सहिष्णूता, सामाजिक न्याय तथा राष्ट्र के हित के लिए त्याग की भावना रखने के लिए प्रेरणा देनी चाहिए, आजकल के नेतागण आंतरराज्य झगड़ों और आंतरपक्षीय उलझनों में ही व्यस्त रहते हैं। तो, जरूरत इस बात की है कि राजकारण मूल्याधारित हो, और नेताएँ सभी ध्यान रखें कि इन मूल्यों पर स्वयं अडिग रहे तथा अपने मन के अन्दर समानता बनाये रखें। राजकीय नेताएं तो वास्तव में अति नम्र, निमित्त व्यक्ति होने चाहिए जो गरीब से गरीब, कनिष्ठ से कनिष्ठ लोगों के भी सेवा में उपस्थित रहे और यह तभी संभव है जब व्यक्ति आध्यात्मिकता की गहराईयों को

जीवन में धारण करता है।

7. व्यवस्थापन

राम अथवा रावण राज्य बनने के पीछे सत्ता नामक शक्ति है। सत्ता का सदुपयोग और दुरूपयोग ही राज्य को राम अथवा रावण राज्य बहाल करती है। सत्ता का यथार्थ उपयोग न करने की वजह से अनेक राजाओं को राज्य-भाग खोना पड़ा था। इरान के राजा को भी इसी वजह से राजगद्दी छोड़नी पड़ी थी। सतयुग में धन, राज्य-सत्ता, धर्म यह तीनों प्रमुख शक्तियाँ है। सुख के लिए मर्यादाओं का पालन बहुत ही महत्वपूर्ण है। मर्यादाओं का पालन ही सतयुग के सुख का कारण है और उनका उल्लंघन आज के युग के दु:ख का कारण हे। रामायण और महाभारत का मुख्य कारण कौटुंबिक मर्यादाओं का सम्पूर्ण उल्लंघन ही है।

सतयुग को स्वर्ग भी कहा जाता है। स्वर्ग 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमो धर्म वाले देवी-देवताओं की दुनिया है। स्वर्ग सर्व श्रेष्ठ भाग्यवान लोगों की दुनिया है। स्वर्ग माना राज्य अटल, अखंड, अचल और अविनाशी.....।

स्वर्णिम युग का आरंभ अर्थात विकर्माजीत संवत सन 01/01/0001 से होगा। अर्थात वह समय जब विश्व महाराजन और विश्व महारानी राजगद्दी पर विराजमान होकर इस समस्त विश्व की बागड़ोर सम्भालने के उत्तराधिकारी बनेंगे।

8. प्रशासन

सतयुग में प्रशासन का कार्य बहुत ही सरल और पारदर्शक होता है। वहाँ हर नागरिक की जरूरतें बहुत ही ध्यान देकर और बिना किसी भेदभाव के पूरी की जाती है। और वह भी बहुत मीठे और प्यार भरी भावना से और हर चीज और प्रश्नों पर सरल व्यवहारिक समाधान शीघ्र दिये जाते हैं। वहाँ निर्माण, निर्वाह, अन्न-उपज, महलों का निर्माण यह सारे क्षेत्र एक-दूसरे के साथ बहुत सहकार्य से कार्य करते हैं। उनके हर लेन-देन में पूर्ण समतोल होता है। वहाँ का प्रशासनिक कार्य एक परिवार की तरह चलाया जाता है। जिसमें हर एक व्यक्ति की जरूरत पर खास ध्यान दिया जाता है। और हर व्यक्ति के गुणों को, उसकी काबीलियत को पूर्ण आदर और

सम्मान दिया जाता है।

जैसे कि वहाँ हर व्यक्ति सारे साधनों से परिपूर्ण होते हैं। इसलिए वहाँ कोई स्वार्थ भावना नहीं होती है। इसलिए सारा राज्य ही एक परिवार की तरह चलता है। इसलिए राज्य चलाना वहाँ कोई बोझ-सा नहीं लगता। बल्कि बहुत ही सरलता से और हल्के-पन से चलता है। जल्दबाजी वहाँ बिल्कुल नहीं होती क्योंकि हर कोई शान्तिपूर्ण ढ़ंग से रहता है।

9. दरबार

स्वर्ग के राज दरबार की महिमा ही कुछ निराली है। राज दरबार के प्रवेश द्वारा ही नौ रत्नों से सजाया होता है, जिसमें आने वाली नवरंगी रोशनी ही देवताओं का स्वागत करती है। कहा जाता है देवताओं के पैर जमीन पर नहीं पड़ते। वहाँ पर दरबार में चारों ओर रंगबिरंगी फूलों के कलाकृति से सजा गलीचा (कालीन) होता है, जिस पर अपने नाजुक कमल चरणों को रखते हुए महाराजा-महारानी, राजा-रानी, राज-परिवार के अन्य सदस्य अपने-अपने हीरे-रत्नों से जड़ित सिंहासन, आसन आदि को सुशोभित करते हैं। दरबार में एक तरफ महाराजा-महारानी के लिए ऊँचा स्थान होता है तो दूसरी ओर अनेकानेक रजवाड़ों (राज्यों) के राजा-रानी एवं उनके परिवार के लिए स्थान होता है। सभी दरबार में पधारे राज-महमानों के लिए अनेकानेक दास-दासियाँ सेवा में तत्पर रहते हैं। महलों की चारों ओर झरोंखें (खिडकियाँ) होती है। उन झरोंखें में लगी हीरे-रत्नों द्वारा दरबार में रोशनी आती है। झरोखें रंगबिरंगी सुंदर पारदर्शक रेशमी पर्दो से सुशोभित होते हैं और ऐसे रेशमी पर्दों से सजे स्वर्णिम दिवारों की शोभा बढ़ाते हैं। उपर छत (गुंबज) भी सुनहरे डिजाइन से कलांकित होती है और उस छत के आधार स्तंभ भी गोलाकृति के होते हैं जो भी दरबार की शान बढ़ाते हैं। छत में लगे रंगबिरंगी हीरों से बने झुम्मर जिसमें आती हुई इन्द्रधनुषी सप्तरंगी किरणें दरबार की शोभा में चार चाँद लगाती है। ऐसे झगमगाती हुई स्वर्णिम दरबार में शोभनिक चैतन्य मूर्तियों (देवी-देवतायें) कभी रास-गान द्वारा, कभी संगीत-संध्या द्वारा एवं कभी राज-चर्चा द्वारा दरबार को सजाते हैं।

दैवी समाज

1. समाज

स्वर्णिम युग में एक आदर्श समाज व्यवस्था होती है। जिसमें आध्यात्मिक, आधी भौतिक, भौतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वाणिजिक, शैक्षणिक, नैतिक, सामाजिक तथा शरीरिक संबंधों की व्यवस्था सतोप्रधान रूप में होती है। मनुष्यों का आपसी व्यवहार सम्पूर्ण नैतिक मूल्यों के आधार पर ही चलता है। और समाज दैवी गुण सम्पन्न और सुखी होता है। वहाँ के श्रेष्ठ भाग्यवान आत्माओं को दरबार का सन्यास नहीं करना पड़ता क्योंकि उनके आपसी संबंधों में मोह या वासना रूपी कामना नहीं होती। वहाँ हर व्यक्ति सचरित्रवान होता है। इसलिए उनके व्यक्तित्व के बीच कभी टकराव नहीं होता है। ना ही कभी धन समपत्ति के वजह से झगडा फसाद या धोखा बाजी होती है। वहाँ हर कोई राजा हो या प्रजा हो सब प्रमाणिक, प्रेम पूर्ण स्वभाव और सत चरित्र के होते हैं। वहाँ कोई भी व्यवसाय वहाँ के समतोल को नहीं बिगाडता है। हर कोई को राज्य में योग्य भूमिका निभाने को मिलती है। वहाँ ईर्षा, द्वेष या मतों की भिन्नता कभी नहीं होती है। क्योंकि वहाँ हर कोई को समान रूप से संतोष होता है। हर एक को उनके गुणों के अनुसार समाज में स्थान मिलता है। मानों जैसे हीरों को उसकी चमक रंग और योग्यता अनुसार किसी कलाकृति पर अलग अलग स्थान पर लगाया जाता है।

वहाँ सभी अच्छे से अच्छी सुखदायी सम्पन्न परिवार हैं। अनेक मर्तबे होते हुए भी परिवार के रूप में चलता है। वहाँ रॉयल परिवार का पद भी इतना होता है जितना तख्तनशीन महाराजा महारानी का होता है। उनका भी पद और रिगार्ड इतना ही होगा जितना महाराजा महारानी का होगा। दास-दासियाँ होंगी पर यह नहीं कहेंगे कि यह दास-दासी हैं। नम्बर होंगे, सेवा होगी लेकिन दासी है, इस भावना से नहीं चलेंगे। वहाँ परिवार के सब सम्बन्ध में खुश मिजाज, सुखी परिवार, समर्थ परिवार, जो भी श्रेष्ठताएँ हैं, वह सब हैं। वहाँ सर्व प्रकार के साधन या सुविधा होते हुए भी उनसे प्राप्त संबंध और सुख में सदा संतोष रहता है।

समाज में जैसे कई बातें आती हैं, वहाँ की भाषा, वहाँ के स्वयंवर, आपसी संबंध, जन्म और मृत्यु, परिवार आदि विषयों के संबन्ध में आगे चेप्टर में दिया गया

है।

2. संस्कृति

आनंद संपत्ति में अवलंबित होता है और स्वर्ग में बहुत मात्रा में संपत्ति होती है। संपत्ति की वजह से वहाँ पर विमान, बड़े राजमहल और हर प्रकार का ऐशो-आराम होता है। वहाँ पर संपत्ति, शान्ति और पूर्णत: निरोगी शरीर होता है। देवी-देवता सब प्रकार का आनंद उठाते हैं इसलिए, उसे सुख की दुनिया कहा जाता है। भारत की संस्कृति अन्य संस्कृतियों से बहुत प्राचीन है। इस युग में मानव जीने का तरीका, उनके खाने का तरीका, उत्सव बहुत ही अनुशासन में मनाये जाते हैं। भारतीय संस्कृति की शुरूआत देवी-देवताओं की बहुत ऊँची सामाजिक जीवन प्रणाली से होती है। उनका आहार, उनके बोल सब कुछ आलिशान (बादशाही) होता है। उनका सुख भी अत्योच्य होता है। श्री लक्ष्मी-श्री नारायण हमेशा हसमुख और प्रेरणादायी होते हैं। प्रसन्न और हसमुख रहकर वहाँ पर अज्ञान रूप से सुख होता है। स्वर्ण और त्रेतायुग में जीवन मुक्ति का अस्तित्व रहता है। देवी-देवताओं के बीच का प्यार पावन होता है। स्वर्ग्रयुग में प्यार होता है पर पाप नहीं होता।

3. भाषा

सतयुग की भाषा शुद्ध हिन्दी होती है। हर शब्द वस्तु को सिद्ध करता है। एक शब्द का एक ही अर्थ होता है। स्पष्ट होता है जिससे भाव बदल न जाये। भाषा हिन्दी ही होती है किन्तु आज स्टेशन को शुद्ध हिन्दी में भक-भक अड्डा या ट्रेन को लोह पथ गामिनी बोलते हैं। ऐसे बोलने में कष्ट नहीं होता। भाषा संस्कृति नहीं परंतु संस्कार युक्त अर्थात बोलने में मधुरता नम्रता एक-दो को सम्मान देने वाले शब्दों सहित 9आप आप" कर पुकारने वाली होती है। साथ-साथ नयनों की भाषा भी होती है, जिससे ईशारों में समझा जा सके। कहावत भी है देवताओं को इशारा ही काफी है या इशारों को समझने वालों को देवता कहा जाता है।

4. स्वयंवर

शादी समारोह बड़े पैमाने पर किये जाते हैं। मित्र संबन्धी आकर सबको हार

पहनाते हैं और एक-दूसरे के मस्तक पर तिलक करते हैं। वहाँ प्रेम विवाह नहीं होते। दोनों परिवार के सभी सदस्य मौजुद रहते हैं। वधू के साथ दहेज नहीं पर उपहार के रूप में दिया जाता है। उपहार के रूप में गाँव भी दिये जाते हैं। साथ ही धन के रूप में सोने हीरे जवाहिरातों के विभिन्न प्रकार के गहने देते हैं। इसके अतिरिक्त पशुधन, दस-दासियाँ आदि भी देते हैं। शादी की रसम महिनों तक उत्सव के रूप में मनाते हैं। शहनाई के सूर वातावरण को संगीतमय बनाये रखते हैं। ढोलक के ताल पर मित्र संबन्धी रास एवं नृत्य करते हैं। वहाँ किसी एक घर में स्वयंवर हो तो सारे गाँव में सजावट की जाती है। और राजा महाराजा के घर में विवाह हो तो सारी राजधानी को रंगबिरंगी फूलों से सजाई जाती है। ऐसा लगता है कि सारी राजधानी में कोई उत्सव मनाया जा रहा है।

5. आपसी संबंध

स्वर्ग के देवताई संबंध चाहे राजा-प्रजा के बीच हो या राज घराने के आपसी पारिवारिक संबंध, उनमें एक ऐसा अनोखा स्नेह होता है। जिसके उदाहरणार्थ कहा जाता है कि वहाँ जानवर अर्थात शेर और गाय एक ही घाट पर पानी पीते हैं। जिस राजा के राज्य में जानवर भी लड़ाई-झगड़ा क्या होता है यह नहीं जानते, उन राजा-प्रजा में कितना आपसी स्नेह होगा और राजा-प्रजा में आपसी स्नेह हो तो वहाँ दैवी परिवारों में कितना प्रेम होगा। वहाँ नि:स्वार्थ भावना के कारण आपसी संबंधों में स्नेह बना रहता है और यही स्नेह के कारण वहाँ दैवी परिवारों में, राज घरानों में, समाज, राज्य एवं देश में एकता बनी रहती है, आपस में भाईचारा रहता है। वहाँ महाराजा, राजा, साहुकार, प्रजा, दास-दासी ऐसे अनेक पद होते हुए भी न ही महाराजा-महारानी वा राजा-रानी में अहंकार या अभिमान होता है न ही प्रजा व दास-दासियों को हम निम्न स्तर के है -ये लघुताग्रंथी होती है। राजा अपनी प्रजा की पालना अपने सन्तान की तरह करते हैं और प्रजा भी उन्हें मात-पिता की नजरों से पालना लेते हुए आदर-सम्मान देती है। वहाँ के संबंधों में किसी भी प्रकार के बंधन नहीं होते। जिससे किसी भी प्रकार का दु:ख अशान्ति हो जैसे यहाँ माँ-बाप अपने बच्चों की पालना तो करते हैं, परंतु यह स्वार्थ भी होता है कि वह बुढ़ापे में हमारा सहारा बनें। यह स्वार्थ,

स्नेह ही मोह का बंधन बनकर दु:ख का अनुभव कराता है। वहाँ बच्चे माँ बाप को छोड़ कर अलग नहीं रहते। पारिवारिक संबंध भी कम होते हैं जैसे हरेक परिवार में सिर्फ एक बच्चा, एक बच्ची होते हैं। उसके कारण मौसी, मौसा या चाचा, चाची जैसे संबंध नहीं होते हैं। इसलिए आज भी कहा जाता है 9छोटा परिवार सुखी परिवार“।

6. जन्म और मृत्यु

स्वर्णिम युग के आदि की जन संख्या तकरीबन नौ लाख के आस-पास होगी। फिर वृद्धि को पाती रहेगी... सतयुग के समाप्ति पर एक दो करोड के करीब होती है। त्रेता के समाप्ति तक जन संख्या 33 करोड होती है।

वह युग अशोक वाटिका कहलाया जाता है। वहाँ कोई शोक नहीं होता। जन्म से लेकर, शरीर त्याग देने तक हर क्षण आनंद से बीतता है।

उस स्वर्ण युग में देवी-देवताओं का जन्म, कलियुग के नियम प्रमाण नहीं होता, योगबल द्वारा पवित्रता से होता है। कई लोग इस बात पर विश्वास नहीं करते, परंतु अपने साधारण जीवन में भी कई ऐसी बातें हैं जैसे कि आँख आना - यह बीमारी तो सिर्फ जिनको आँख आयी है उनको देखने से होती है। ऐसे ही हम गर किसी खाने कीचीज का सिर्फ नाम भी सुन लेते हैं या उसकी खुशबू आ जाती है तो भी हमारे मुँह में पानी आ जाता है। अगर हमारे मन के संकल्प से ये बातें हो सकती है तो वहाँ योगबल से बच्चे क्यों नहीं हो सकते? अर्थात हमारे संकल्पों से शरीर की रचना बनती है। देवी-देवताओं के संकल्प तो कितने शक्तिशाली होते हैं। वहाँ पर नर और नारी एक दूसरे के आँखें देखकर शक्तिशाली संकल्पों अर्थात योगबल से बच्चे को जन्म देते हैं। हम यह भी मिसाल जानते हैं कि महाभारत में भी कुंती ने सूर्य के द्वारा कमर्ण को माँग लिया था। यही कारण है कि बच्चे को गर्भ में यातनायें नहीं भोगनी पड़ती और न ही माँ को पीड़ा सहन करनी पड़ती है। जन्म के समय पर साक्षात्कार होता है। देवकी मैया को भी कृष्ण के जन्म से पहले साक्षात्कार हुआ था। वहाँ यह भी कायदा है कि बच्चा किस आयु में आयेगा? ऐसे नहीं कि 15-20 वर्ष में कोई बच्चा पैदा होगा जैसे यहाँ होता रहता है। वहाँ औसत आयु 150 वर्ष की

होती है, तो आधी उम्र से थोड़ा पहले अर्थात 65-75 के उम्र में पैदाइश होती है। यह कायदा है कि पहले बच्चे का जन्म होता है और 7-10 वर्ष के पश्चात बच्ची का जन्म होता है। परंतु एक ही बच्चा और एक ही बच्ची होगी।

वहाँ कभी कोई किसी को तंग नहीं करते हैं। बच्चे आदि भी तंग नहीं करते हैं। बहुत खुश होते हैं। वहाँ अकाले कोई मृत्यु नहीं होती है। अपनी इच्छा से शरीर छोड़ते हैं, मजबूरी से नहीं। जैसे पुराना वस्त्र अपनी इच्छा से बदली करते हैं, वैसे ही शरीर रूपी वस्त्र भी समय प्रमाण, आयु के प्रमाण अपनी इच्छा से बदली करेंगे। वहाँ आयु 150 वर्ष होने का कारण है पवित्र एवं निरोगी तन जिसमें किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं होती और न ही बुढ़ापे में दाँत गिर जायेंगे और न ही शरीर में झुरियाँ पड़ेगी। न ही बुढ़ापे में कमर से झुककर टेढ़े-बाँके होंगे, जिसके कारण हाथों में लकडी का सहारा लेना पड़े और न ही आँखों में मोतिया आएगा। न आँखों में चश्मा चढ़ेगा और न कानों से बहरे होंगे। न ही लूले लंगड़े होंगे। शुद्ध पौष्टिक आहार के कारण शरीर अंत तक सम्पूर्ण स्वस्थ रहेगा। और शरीर छोड़ने के पहले भी साक्षात्कार होगा कि अभी यह शरीर छोड़कर बालक बनूँगा। और ऐसे शरीर छोड़ेंगे जैसे 'मख्खन से बाल' बैठे-बैठे आरम से, बिना कोई तकलीफ।

शरीर को उठाने वाले चंडाल आयेंगे और चंडालों के अपने विमान में डालकर ले जायेंगे। जैसे आजकल एम्ब्युलन्स होती है ना। यहाँ के जैसे उठाकर ले जाना ये तकलीफ की बात वहाँ नहीं होती। वहाँ चण्डाल होंगे, परंतु ऐसा नाम नहीं होगा। स्मशान स्मशान नहीं लगता है। जहाँ तहाँ सुंदर खुशबुदार फूल खिले हुए नजर आते हैं। शतल झरना बहता हुआ जाता है। वहाँ शरीर को बिजली पर रखा और कुछ क्षणों में खलास। यह सुंदर डिझाइन वाली मशीनरी होंगी जो सोलार पर चलेगी.....।

7. परिवार

वहाँ पर संबंधों में शान्ति और आनंद होता है। औसत आयु 150 साल की होती है और शरीर सम्पूर्ण स्वस्थ होता है, मातायें उम्र के 75 साल तक बच्चे को जन्म नहीं देती।

परिवार में 4 सदस्य होते हैं, दो बच्चे और माँ-बाप। बहुत से नौकर भी होते है। राजकुमार और राजकुमारी अपने ही उम्र के बच्चों के साथ बगीचों में खेलते हैं। वहाँ वे हीरों से जड़े झूलों पर झूलते हैं। छोटे बच्चे भी विमानों को चलाकर अपने मित्रों से मिलने दूसरी राजधानियों में जाते हैं।

जब दो इन्सानों के व्यक्तित्व के पहलू समान होते हैं, तो पालक समझ जाते हैं कि यह जोड़ा अनुरूप है। आमतौर पर सबसे पहले कन्या कुमार से पूछती है कि क्या वह उससे शादी करने की दिल रखता है?

शादी समारोह बड़े पैमाने पर किये जाते हैं। मित्र संबंधी आकर सबको हार पहनाते और एक दूसरे के मस्तक पर तिलक करते हैं। वहाँ प्रेम विवाह नहीं होते हैं परंतु मात पिता हमेशा शादी के निमंत्रणों का प्रयोजन करते हैं, दोनों परिवारों के सभी सदस्य मौजूद रहते हैं। वधू के साथ दहेज दिया जाता है परंतु हरेक के पास जरूरत से ज्यादा होने के कारण दहेज के लिए उपहार एकत्रित करना मुश्किल कार्य नहीं होता। कभी कभी दहेज के रूप में गाँव भी दिये जाते हैं।

बच्चों को जन्म दिया जाता है लेकिन उसमें कामविकार का अंश मात्र भी नहीं होता। माता पिता के बीच में सिर्फ एक शुद्ध संकल्प होता है कि परिवार में एक बच्चा आ जाए और फिर विशेष आत्मा को परिवार के तरफ आकर्षित किया जाता है। यही है योगबल से जन्म। बुद्धि इतनी स्वच्छ होती है कि यह शुद्ध अनुभव होता है कि बच्चों का जन्म अब होने वाला है। माँ के मन की शान्त स्वरूप स्थिति गर्भ के अंदर बच्चे के प्यार से पालना करती है। माँ को बच्चे की जरूरतों का इतना ख्याल रहता है कि बच्चे को जरूरत इच्छा की महसूसता होने के पहले ही आहार दिया जाता है। आमतौर पर पहले लडके का जन्म होता है और फिर कुछ वर्षो बाद दूसरा बच्चा, एक लडकी के रूप में जन्म लेता है। मन की स्थिति ऐसी होती है जिसमें संकल्प नहीं होते परंतु अर्थ की पहचान होती है। आत्माओं के बीच, गहरे स्नेह की लहरें उत्पन्न होती रहती है।

बुजुर्ग शरीर में मन और ही स्पष्ट और शान्त हो जाता है। शरीर छोडने से पहले भी शरीर में कोई तकलीफ नहीं होती है। शरीर में कोई भी वेदनायें नहीं होती क्योंकि तत्त्व शुद्ध होते हैं। शरीर छोडने से पूर्व ही यह ज्ञात रहता है कि किस घडी

शरीर छोडेंगे। आप अपने को बुजुर्ग व्यक्ति महसूस नहीं करते क्योंकि हर कर्मेन्द्रिय शरीर छोडने तक सफाई से किया करता रहता है। शरीर छोडते वक्त यह संकल्प रहता है कि "मैं अब इस शरीर को छोडकर नया शरीर घारण करने वाला हूँ"" । आप शरीर भी आनंद पूर्वक छोडते हैं और जन्म भी खुशी से लेते हैं।

पुत्र को गद्दीनशीन करके, पालक राज्य के कारोबार की देखरेख करते रहते हैं। पालक 9स्वइच्छा" कहते हैं 9उन्हें राज्यकर्ता बनकर अभी राज्य कारोबार करने दें" नैसर्गिक रीति से लेन-देन होती है। आप जहाँ भी जाते हैं, उपहार जरूर देते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे पूर्व देशों के तीन राजायें जो कि ईशु क्रिस्त को जन्म स्थान पर देखने के लिए गये थे, उपहार देना बहुत ही सहज तरीके से होता है। संबंधों में सम्पूर्ण समन्वय होता है। महाराजा और महारानी के बीच स्नेह होता है परंतु यह स्नेह संबंध तक सीमित नहीं होता। यह कोई मतलब का स्नेह नहीं होता है। उनका स्नेह रॉयल परिवार और प्रजा के साथ बाँटा जाता है।

8. उत्सव, धर्मिक अनुष्ठान

देवी-देवताओं की शादी बहुत शानदार होंगी। राजकुमार के बाद वे बादशाह बनते हैं। उसके नारायण के राज्याभिषेक का उत्सव मनाया जाता है। वहाँ की पद्धति अनुसार, पित्र पुत्र के सर पर मुकुट पहनाता है और अलग जिंदगी में प्रवेश करना है। वह अपने बच्चों के लिए महल बनवाते हैं। और उनकी सारी इच्छायें पूरी करते हैं। देवी-देवतायें मनोरंजन की मला में निपूण होते हैं। संगीत, नाटक और कविता उनमें भी वे माहिर होते हैं। सुवर्ण युग में वे कृष्ण का नृत्य बताते हैं। अवश्य राजकुमार और राजकुमारियाँ एक साथ नाचते होंगे, लेकिन अन्य लोक राजाई परिवारों के सदस्यों के साथ नृत्य नहीं कर पायेंगे। आप नाच और अभिनय कर सकते हैं।

9. दर्जा और उदयोग

सूर्य राजकूल में विश्व के बादशाह के साथ वहाँ पे अपने अपने राज्य के भी राजा होंगे। राज्य में सभी प्रकार की आत्माओं की जरूरत होती है। जो संबंध में होती है, जो सेवा करती है, रिश्तेदार और उत्तराधिकारी। सतयुग में राजा होगा, प्रजा धनवान होगी। रॉयल परिवार में भी दो प्रकार के लोग होंगे। एक राजा होगा

और बाकी सभी रिश्तेदार होंगे। राज्य में जो सिंहासन पर बैठेंगे वो तो होंगे और राजा को सहयोग करने वाले और नजदीकी भी होंगे।

जीवन पद्धति

1. जीवन पद्धति

वहाँ हर त्योहर पर अलग तरह की पोषाखे पहनी जाती है। वहँ के दर्जी सुंदर पोषाखे बनाते हैं, सोनार उतने ही सुंदर अलेकार। वहाँ के अलंकार वजन से बहुत हल्के होते हैं क्योंकि वह शुद्ध सोने के बने होते हैं। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपने कितने सारे आभूषण पहन कर रखे हैं उसका कोई वजन महसूस नहीं होता। ना ही उन्हें धारण करने पर कठीनाई महसूस होती है। वहाँ अलंकार इतने विविध प्राकर के होते हैं कि हर जगह अपने विषेष अलंकार और पोशाखे होती हैं।

अंगुठियाँ, कड़े, कंठहार हो या मुकुट सारे शुद्ध सोने से बने होते हैं जिन पर भारी मात्रा में हीरे जड़े हुए होते हैं। हीरे भी कई सारे रंगो में उपलब्ध होते हैं। उनकी झलक ऐसी होती है मानों उसके अंदर कोई अग्नि जल रही हो जिसके प्रकाश से वह दमक रहा है। मुकुट के उपर भी कई हीरे होते है जो सुंदरता को निखारते हैं। हर हीरे की अपनी एक ऐसी चकम और रंग होता है जो मिलकर इन्द्रधनुष्य जैसी छटायें बिखेरते हैं। इसलिए वहाँ इन्द्रधनुष्य देखने के लिए बरसात का इंतजार नहीं करना पडता।

वहाँ की पोशाखे बहुत ही मूल्यवान कपड़ों की बनी होती है। जूते भी अति मूलायम मखमल के बने होते हैं। जिन पर हीरे जडे होते हैं। और सोने का आवरण चढ़ा होता है। वहाँ बाल भी बहुत सुंदर होते हैं जिनका अपना एक शाही अंदाज होता है। इनमें पहनने के लिए भी हीरों से जड़े सुंदर आभूषण होते हैं।

सबसे सुंदर वातावरण तब होता है जब लोगों को राज दरबार में उपस्थित होना होता है। वह उनके जीवन शैली में बहुत ही महत्व पूर्ण अवसर होता है इसलिए हर व्यक्ति उसका सबसे सुंदर पोशाख परिधान करता है। राजा भी हर दिन एक नया पोशाख पहनता है। उनके पोशाखों से एक प्रसन्नता और नयापन झलकता है। इस तरह से वहाँ सदाचार स्वच्छता और शक्ति का सुंदर मिश्रण दिखता है। वहाँ शरीर

भी कमल के फुल के भाती होता है। जैसे हर अंग एक पंखुडी की तरह हो। जो मुलायम और योग्य आकार के होते हैं। उनसे प्रेम और पवित्रता की सुगंध वातावरण में बिखरती है। दैवी गुण यह हर व्यक्ति में अंदरूनी तौर पर उपस्थित होता है। और यह उनके सारे कर्म में बहता नजर आता है। शरीर पूर्ण तरह से दोष रहित होता है। जैसे कोई परिपूर्ण हीरा है। हाथ पैर के आकार और लंबाई भी शरीर के अनुरूप होते हैं। जिन पर वस्त्र धारण करने पर वह और ही सुंदर दिखाई देते हैं। त्वचा भी बहुत मुलायम और दोष रहित होती है और उसे किसी रंग से रंगाया नहीं जाता क्योंकि वहाँ ऐसी सजावट की कोई आवश्यकता नहीं होती है। वहाँ व्यक्ति का रूप किसी अलंकार की भाँति चमकता है।

2. दिनचर्या

अंग्रजी में एक कहावत बहुत प्रचलित है:- Early to bed, Early to rise, makes a man healthy, wealthy and wise.

उस निरोगी, सम्पन्न और सुख भरी दुनिया में देवताओं का जीवन, उनकी दिनचर्या सब से जुदा, सबसे अलग, न्यारा एवं प्यारा जीवन था। जिसका यादगार आज भी भक्ति में भक्तजन नियमपूर्वक प्रातःकाल 4-5 बजे उठकर, स्नान आदि करके शंख की मधुर ध्वनि से अपने इष्ट देवताओं को जगाते , बड़े भाव और श्रद्धा से अपने इष्ट के पूजा, अर्चना में लग जाते। यह भक्ति की अनेक कर्मकाण्ड, सूर्योदय से पहले ही शुरू हो जाते।

वास्तव में यह सब यादगार है उस युग की जिस स्वर्णिम युग में देवी-देवताओं का वास था। पर उन युगों में देवी-देवताओं को इस तरह शंख बजाकर उठाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी और न ही अलार्म की घण्टी उन्हें उठाती थी। वे तो सूर्योदय से पहले ही, स्वाभाविक रूप से उठ जाते थे। उठकर जो भी सम्मुख देवी-देवता मिलते है उनसे हर्षित चेहरे द्वारा अभिवादन की लेन-देन करते हैं। पंछियों की मधुर-मधुर, मनमोहक बोली उन्हें जगाती है। प्रातः उठने के बावजूद भी वे तरोताजा रहते क्योंकि वहाँ कोई शारीरिक थकान नहीं होती और न ही देर रात तक जागरण किया करते। आज की तरह वहाँ कोई टुथब्रुश और टुथ पेस्ट माउथ रीन्सर का

उपयोग करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उठते ही, वे सुगंधित जल से स्वयं को तरोताजा कर देते हैं। पश्चात, दास-दासियों के साथ महलों के सुंदर फूलों के बाग-बगीचों में टहलने निकलते हैं। जहाँ अनेकानेक श्रृंगार के लिए फूल इकट्ठा करने लगते हैं। मोर, बुलबुल, कोयल अपनी मीठी आवाज से उनका मनोरंजन करते हैं। हिरण, खरगोश जैसे सुंदर प्राणी इर्द-गिर्द रहकर उनका दिल बहलाते हैं।

ततपश्चात वे स्नान आदि के आनंद के लिए बाग-बगीचों के बीच बने जडीबूटियों के सुगंधित जलाशय में उतरते हैं। जहाँ दास-दासियाँ उन्हें नहलाती है और उनके कंचनकाया की मसाज चंदन से करती है। उसके पश्चात उन्हें सजाने के कमरे में लाया जाता है। वहाँ दास-दासियाँ विविध प्रकार के श्रृंगार, जरी आदि से सजे सजाये वस्त्र, नये नये रत्न जड़ित अलंकार और फूलों से हीरे रत्नों से जडित दर्पण के आगे सजाती है और दरबार के लिए तैयार करती है।

ततपश्चात वे फलाहार के लिए अपने विशेष भोजन कक्ष में अपने राजपरिवार के साथियों के साथ पहुँचते हैं, सुंदर मधुर रसीले फल आरोग्य हेतु टेबल की शोभा बढ़ाते हैं जिनका वे रसपान करते हैं।

इस बीच नन्हें राजकुमार-राजकुमारियों को बड़े मान-शान से तैयार किया जाता है और उन्हें अनेक प्रकार की विद्या जैसे कि राजविद्या, चित्रकला, नृत्यकला, संगीत कला आदि सीखने भेजा जाता है। जहाँ हर कला मनोरंजन का साधन होती है और वे उन सीखी हुई विद्या द्वारा मन को प्रफुल्लित करते हैं। कभी नृत्यकला का आनंद लेते हैं, कभी चित्रकला का आनंद लेते हैं।

दोपहर के सुंदर वातावरण में महलों के रसोई घर से आती है छप्पन प्रकार के व्यंजनें की सुगंध। महाराजा-महारानी अपने दरबार के कार्य को समेटकर, राजकुमार-राजकुमारियँ अपने शिक्षास्थल से लौटकर एक विशाल रॉयल डायनिंग हॉल में मिलते हैं। पूरा राजपरिवार विशाल आकृतिक डायनिंग टेबल पर, स्वर्णथाल में सजे छप्पन भोग (अनेक प्रकार के व्यंजन) का आनंद लेते हैं।

संध्या होते ही राज दरबार में विविध प्रकार के प्रोग्राम आरंभ होने लगता है। बच्चों के लिए अलग, वरिष्ठों के लिए अलग स्थल निश्चित किया जाता है, जहाँ सर्व अपने-अपने रूचि अनुसार इस प्रोग्राम में भाग लेते हैं। प्रोग्राम आरंभ होने के पहले

और पश्चात सुंदर रंगबिरंगी आतिशबाजी जलाकर अपनी खुशियों को व्यक्त करते हैं। सारा राज्य आतिशबाजी इन रंगों से हीरे सोने की चमक से जगमगा उठता है। हर रात दिवाली होती है।

चंद्रमा के उगते ही सभी अपने-अपने महलों में, कक्ष में, पंछी अपने घरों में पहुँच जाते हैं। पत्तों की सरसराहट, पवन की मस्ती भरे झोंकें, चंद्रमा की शीतल चाँदनी सभी को नींद के आनंद में ले जाती है।

3. भोजन और फल

आहार, अन्न, खाद्य पदार्थ विविध प्रकार से प्रचूर मात्रा में उपलब्ध है। वह फल, धान्य, पानी और दूध बहुत ही स्वादिष्ट और पौष्टिकता से भरपूर है। फल केवल खाने के लिए आनंददायक ही नहीं, लेकिन फलों से लदे पेड़ों से धीरे से तोडने पर भी उसके (पेड के) डालियाँ फलों के वजन से झूलने लगते हैं। प्रत्येक फल इतना रस भरा होता है, जो उसे पीने के लिए कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती। जैसे ही फलों के खाल को हल्के ऊँगलीयों से दबाया जाये, उसमें से ऐसा सुस्वाद भरा मीठा रस फव्वारे की तरह निकलता जो सीधा ही पीया जा सकता है। उन फलों में खट्टे और नमकीन फल भी पाये जाते हैं, ताकि भोजन में जैसा स्वाद चाहिए उसका प्राकृतिक रूप से मजा लिया जा सकता है। बगैर कोई कृत्रिम पद्धति को अपनाये। खाना पकाने के लिए सौर उर्जा का इस्तमाल किया जाता है। रसोई घर में एक विशेष धातु का बनाया पात्र होता हे जो इस सूर्य उर्जा को अपने उंदर समाता है। पानी भी जड़ी-बूटियों के सुगंध को लिये हुए होता है, स्वाद और शक्ति से भरपूर। वह पानी दूध के बराबर होता है, जिसकी नदियाँ सदा बहती रहती है, सृष्टि का एक सुंदर दृश्य बनकर।

4. वेशभूषा

वैकुण्ठ वासी देवी-देवताओं के कपडे विशेषतर रेशमी और मखमली होते हैं। वहाँ के कपड़ों का रंग अलग-अलग हीरों के चूर्ण से तैयार किया हुआ होता है। जो सदा कपडों को चमकाता रहता हे। कपडे सभी गहरे (डार्क) रंगों के होते हैं जैसे लाल, नीला, हरा, पीला, आसमानी, श्याम, गुलाबी आदि आदि एवं मुख्य तीन रंगों

की मिलावट से बने नये नये गहरे रंगों के कपडे हल्के रंग सफेद या काले रंगों के कपडे नहीं होते। जो देवी-देवताओं के गोरे पावन अंगों की शोभा बढाते हैं। वहाँ के कपडों के रंग हीरों के चूर्ण से बने होने के कारण पक्के होते है और न ही वहाँ सूर्य की इतनी गर्मी पडती जो वे फीके पड जाये। न ही वहाँ सूती कपडे होते जिससे कपडों में सलवट आदि पडे जिसके कारण इस्त्री आदि कराना पडे। वहाँ इस्त्री आदि नहीं होती। दैवी कपडों की बनावट भिन्न-भिन्न किस्म की होती है। मुख्यत: देवताओं के पहनाव में पितांबर, कुर्ता एवं देवियों के पहनावे में घाघरा, चोली, साडी आदि होते हैं। महाराजा एवं महारानी के पहनावे जैसा और किसी का नहीं होता। वहाँ राजा, रानी, प्रजा, साहुकार, दास, दासी आदि के पहनावे भी भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। परंतु महाराजा, महारानी जैसे नहीं होते है। देवी-देवताओं के हर दिन के भिन्न भिन्न प्रकार समय के सुबह के, दोपहर के, शाम के, खाने के, घुमने के वा टहलने के, सोने के, शादियाँ एवं पिकनिक आदि के भिन्न-भिन्न समारोह के भिन्न-भिन्न पहनावे होते हैं। महाराजा और महारानी तो एक बार पहना हुवा पहनावा दुबारा नहीं पहनते। उनके हर तरह के पहनावे विभिन्न प्रकार के रंगों के हीरे मोती के जवाहिरातों से सजे सोने की जरदोजी (एम्ब्रोयडरी) से सुशोभित होते हैं, वहाँ विभिन्न प्रकार की रचना (डिजाइन) के पहनावे सुंदर फूलों के आकार की हस्तकला से सुरचित होते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तक देवी-देवताओं के पहनावे की रचना (पेटर्न) भी मर्यादानुसार सम्पूर्ण अंगों को ढकने की विशेषता से सम्पन्न होती है।

5. वस्त्र और जवाहिरात

सतयुग में पत्थर सोने और हीरों के बने होंगे। हर एक को हीरे-जवाहिरातों से सजा हुआ मुकुट होगा, पर वहाँ पे विश्व के बादशाह और आदि के मुकुट में अंतर होगा। जूते भी मुलायम मखमल के, मूल्यवान मणिक जडित और सोने से सजाये होंगे। बाल मूल्यवान जवाहरात और अलंकार से सजे होंगे।

6. वास्तुकला

धरती पर ये जो देवता होते हैं इनके निवास बहुत ही अदभूत होते हैं। जो सबसे मजबूत और मूल्यवान जैसे सोना और हीरों से बने होते हैं। ये सोनो हीरे से बने

महल हरे भरे उद्यानों में और वसंत ऋतु जैसे नीले आकाश के नीचे ऐसे जगमगाता है जैस हीरे का कोई गहना नीलमणियों के बीच रखा गया हो।

महल सोने के बने होते है लेकिन उन्हें बनाने के लिए कोई कष्ट या मजदूरी नहीं करनी पड़ती है क्योंकि सोने और हीरे के जो पत्रे बने हुए होते हैं उन्हें आसानी से एक दूसरें से जोडकर दीवारें और छत बनाया जाता है। और फिर उन दीवारों पर अलग अलग आकार में हीरे सजाए जाते हैं। यह दीवारें सोने और हीरे की बनी होने पर भी परदर्शक होती है और उन्हें बनाते वक्त यह पारदर्शिता रहने वाले के जरूरत के अनुसार कम या ज्यादा रखी जा सकती है। सूरज की किरणें भी इन दीवारों पर और उपर लगे हीरों पर इस तरह और तब तक परावर्तित होते है जब तक पूरी दीवार इन्द्रधनुष रूपी रंग नहीं छा जाते। रात को चंद्र प्रकाश इन्हीं हीरों को इस तरह जगमगाता है कि चारों ओर चाँदी जैसा प्रकाश छा जाता है। यहाँ तक कि रात्रि में जब नैसर्गिक प्रकाश मौजूद नहीं होता तब सिर्फ एक मोमबत्ती जलाने से उसका प्रकाश दीवारों और हीरों पर पडकर सारा महल जगमगा देता है।

इस महल के इर्द-गिर्द खुबसुरत बगीचे होते हैं। और इनमें लगे हुए पौधों से विशेष सुगंध आती है और इन पौधों का अपना एक स्वरूप होता हे। जमीन भी नैसर्गिक रूप से बहुत ऊपजाऊ और गीली होती है। हवा भी साफ सुथरी और थोडी-सी उष्ण होती है। यह सारा पर्यावरण मानों पेड़ पौधों का पंछियों का और फूलों का मित्र प्रतित होता है। वहाँ जीने वाली, बढने और खिलने वाली हर चीज में ताजगी और स्वच्छता और पवित्रता की शक्ति दिखाई देती है।

7. देवी देवताओं का व्यक्तित्व, सहेत व सभ्याता

व्यक्ति की प्रभावशाली व्यक्तित्व के साथ अनेक बातें जुड़ी हुई होती है। तन्दुरूस्त शरीर, सुंन्दर नैन-चैन, शरीर की सुदृढ बनावट, उसका कद और मुख्य तो उस व्यक्ति का व्यवहार जिसमें गुणों का दर्शन होता है। जहाँ यह स्थूल और सूक्ष्म गुण मिलते हैं, उसे ही प्रभावशाली व्यक्तित्व कहा जाता है।

आज के युग में ऐसे व्यक्तित्व का होना बहुत मुश्किल है। व्यक्ति की शरीर की बनावट सुंन्दर और तन्दुरुस्त है, परंतु यदि व्यवहार में कोई मिठास, आदर-सम्मान की भावना न हो, तो वह प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला नहीं हो सकता। आज

व्यक्तित्व में कहाँ न कहाँ कमी अवश्य रह जाती है।

परंतु एक नजर उन मंदिरों की मूर्तियों की ओर दौडायें। पत्थर को तराशकर बनाई गई उन मूर्तियों में भी श्रेष्ठ, दिव्य व्यक्तित्व झलकता है। जिसकी एक झलक पाने के लिए भक्तजन कितनी कठिनाईयों का सामना करते हैं। वही मूर्तियाँ जब साकार में थी, तो वह बात की कुछ निराली थी।

उस स्वर्णिम युग में देवी-देवतायें सर्व गुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म और मर्यादा पुरुषोत्तम।

वहाँ सबका शारीरिक सौंदर्य, नैचुरल ब्युटीफुल फीचर्स होते है। इसलिए उन्हें सौंदर्य के साधनों का जैसे क्रिम, काजल, लिपस्टीक, टाल्कम पावडर, नेल-पॉलिश आदि पर फालतू खर्च करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। उनका श्रृंगार नैचुरल रीति से होता है। अतः धन, शक्ति और समय का अपव्यय कभी नहीं होता।

देवी-देवतायें सदा एवर हैल्दी रहते थे। उन्हें छोटी-सी खँसी भी नहीं सताती थी। उनका सुदृढ़, तन्दुरूस्त शरीर, सुंदर नैन-चैन, उन्हें सर्वोच्च सुंदर बना देती है। उनका कद छ फीट से अधिक नहीं होता। वहाँ देवताओं की दाढ़ी आदि नहीं होती है। क्लीन शेव होती है। नैन-चैन से मालुम पड़ता है - यह नर है, यह नारी है। उनके मुख कमल पर सदा मुस्कुराहट रहती है। हर्षितमुख रहना और हँसना - यह दोनों अलग बात है। देवतायें बड़े आवाज से कभी नहीं हँसते। न ऊँचे स्वर में हँसेंगे, न ऊँचे स्वर में बोलेंगे। यह उनके मर्यादा के खिलाफ है। सतयुग में स्व का स्व पर पूर्ण रूप से साम्राज्य होगा। वहाँ देवताओं की वृत्ति, विचार और व्यवहार भी सतोप्रधान, राग, इर्ष्या आदि से परे होता है। अतः धन के बावजूद अहंकार की भाषा नहीं होती। सदा स्नेह की भाषा और मर्यादा की पालना होती है। इन्ही कारणों से देवी-देवतायें, सदा प्रकाश के ताज, प्रभा मंडल से सुसज्जित नजर आते हैं।

वहाँ चाहे छोटा, चाहे युवा, चाहे बुजुर्ग, हर एक को आदर-सम्मान दिया जाता है। परिवार में भी बड़े का राज्य होता है। व्यवसाय में भी लोग बुजुर्गों की इज्जत करेंगे। जिस समाज में व्यक्ति की औसत आयु 150 वर्ष हो अर्थात तन्दुरूस्त शरीर हो और अंत में भी स्वेच्छा से मृत्यु प्राप्त हो ऐसी स्थिति ही सर्व श्रेष्ठ तन्दुरूस्त की, व्यक्तित्व की परिभाषा है।

अर्थ व्यवस्था

1. मुद्रा (सिक्के)

वहाँ का आर्थिक चलन सोने के सिक्के होते हैं जिन पर कलात्मक चित्र होते हैं। सिक्के सोने के होने पर भी उनका महत्व सिफ्र लेन देन के लिए होता है। क्योंकि सोना वहाँ पर इतनी अधिक मात्रा में होता है कि उसका कोई भौतिक महत्व ही नहीं रहता है। वहाँ हर आदमी कोई ना कोई कार्य करता है, जैसे कलाकर लोग प्रकृति के अलंकार और कपड़े बनाते है और बाकी अनेक आकर्षक वस्तुए बनाते हैं। वहाँ भी दुकानदार, किसान, हीरे तराशने वाले, वास्तु निर्माण करने वाले और चण्डाल भी होते है, लेकिन वहाँ कोई डॉक्टर, वकील, जज या पुलिस आदि नहीं होते हैं। क्योंकि वहॉा हर कोई स्वेच्छा से अनुशासन और कायदों का पालन करने वाले होते हैं। वहाँ हर व्यवसाय में लेन-देन प्यार भरे तरीके से होती है। कोई भी व्यापारी नफा या नुकसान का हिसाब नहीं रखता। क्योंकि व्यवसाय सिर्फ एक निमित्त या आवश्यकता अनुसार किया जाता है। वहाँ हर किसीको कोई न कोई कर्तव्य करना पड़ता है। जैसे हर कोई एक परिवार के सदस्य होते हुए भी कुद देने वाले होते है और कुछ लेने वाले। फिर भी उनमें ग्राहक और दुकानदार की भावना नहीं होती है बल्कि हर एक को स्वामीत्व की भावनाए होती हैं।

वहाँ लेन देन की और एक व्यवस्था भी होती है जैसे कि किसी के पास सोना बहुत मात्रा में होता है तो किसी के पास खाद्या सामग्री। तो वे लोग अपनी चीजों को बाजार में एक दूसरे से बदल लेते हैं। वहाँ किसी भी चीजों का अभाव कभी नहीं होता। अगर कोई किसान गेहूँ उगाता है तो वो उसके बदले कपड़े ले लेता है। वहाँ जिसको जिस भी चीज की आवश्यकता होती है वह भरपूर मात्रा में मिल जाती है। वहाँ इतना धन होता है कि सोना, हीरे महल और बाकी अनेक चीजों का निर्माण में इस्तेमाल किया जाता है।

सतयुग में सारे विश्व पर राज्य करने वाले एक ही विश्व महाराजा और विश्व महारानी होंगे। कई छोटे छोटे राज्य और उनके राजायें सहायोगी होंगे और सभी राज्य आर्थिक दृष्टिकोण से सम्पन्न होंगे। जन संख्या में वृद्धि की दर इतनी ऊँच नहीं

होती कि जिससे मानव आर्थिक समृद्धि के परिणामों से वंचित रह जाय। ट्रस्टी पन का भाव सदा सबके दिलों में जागृत रहता है। जिसके कारण ही अर्थ व्यवस्था में श्रेष्ठता आती है। वहाँ विश्व महाराजन और विश्व महारानी का पार्लामेन्ट नियमित रूप से राज चलाता है। परंतु वह मनोरंजन के रूप में होता है। आज के दुनिया की तरह कोई आश्वासन मंत्री कोई शोर-शराबा वाला पार्लामेन्ट नहीं होता। आज के देश की रक्षा और मंत्रीयों के लिए करोडो रूपया खर्च किया जाता है। वहाँ यह फालतु खर्च नहीं होते क्योंकि हर एक बुराईयों से सुरक्षित जीवन जीते हैं। किसीको किसी से भय नहीं लगता। महाराजा महारानी के लिए भी सुरक्षा व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होती है। स्वर्णिम दुनिया में करेन्सी अशर्फियाँ होगी।

शिक्षण पद्धति

वहाँ के शैक्षणिक वर्गो में कोई शोर-शराबा नहीं होता है। विद्यार्थी वहाँ शान्ति से बैठते हैं। लेकिन उनके हलचल में और आँखें में प्रसन्नता की ऐसी चमक होती है मानों उनके शब्द और उनके मुस्कान कोई खेल खेल रही हो। वहाँ पढ़ाई करना एक बहुत ही मीठा आनंद होता है। उनके पढ़ाई का भाग भी सरलता से बनाया हुआ होता है। जैसे उनके परिवार की जानकारी विश्व की जानकारी जिसे हम इतिहास और भूगोल कहते हैं। वहाँ ज्ञान हाँसिल करना किसी मजेदार पहेली को हल करने जैसा होता है। क्योंकि जब उसका उत्तर मिलता है तो वह एक अति आनंदपूर्ण क्षण होता है। और विद्यार्थी को इस प्रकार मोहित करता है कि उस ज्ञान की स्मृति बिना कोई कष्ट किये उसकी स्मृति में हमेशा के लिए छप जाती है।

वहाँ अध्ययन मुख्य तौर पर देखकर और सुनकर किया जाता है। ध्वनि और चित्रों का ऐसा मेल किया जाता है कि अध्ययन विद्यार्थी और बच्चों को एक खेल के भाँति प्रतीत होता है जो उन्हें अदभूत आनंद देता है। इस सारे अध्ययन के दौरान जो ध्वनि भी उत्पन्न होती है वह एक प्रकार का संगीत ही होता है। जिसके माध्यम से विद्यार्थी एक दूसरे के प्रति प्रेम और सुसंवाद जताते हैं। इस संगीत ध्वनि को उत्पन्न करनेवाले उपकरण या वाद्य बहुत ही सरल होते हैं। और मूल्यवान धातुओं से बनाये

होते हैं। और वह इस प्रकार बने होते हैं कि बजाने वाले की सारी आत्मिक भावनाएँ निचोडकर इस भौतिक दुनिया में व्यक्त हो सके।

वहाँ बड़ी-बड़ी किताबों का कागजातों का ढेर का या लिखी-लिखाई बातों का बोझ नहीं होता। वहाँ अध्ययन के सारे साधन आनंद देने वाले होते हैं। विद्यार्थी अपना अनुभव चित्रों के द्वारा व्यक्त करते हैं। यहाँ विद्यार्थी इतिहास और भूगोल जैसे विषय भी चित्र, संगीत और कविता के माध्यम से सीखते हैं। यह सारा ज्ञान ही इतना सरल होता है जैसे पुरी दूनिया ही एक है। क्योंकि वहाँ विविध भाषाओं के या संस्कृति के अलग होने के वजह से जो दुविधा निर्माण होती है वह नहीं होती है। सारी दुनिया ही एक समाज की तरह होती है। वहाँ हर जवान हो या बुढा एक कलाकार, चित्रकार और संगीतकार होते हैं। जैसे वहाँ सिर्फ संगीत, चित्रकारीता और खेल खेलना ही हो। वहाँ गणित भी बहुत सरल होता है। ना ही वहाँ कोई व्यवसाय सीखना कठिन होता है। इसलिए दिमाग पर कोई जोर नहीं होता है। भाषा शुद्ध हिन्दी होती है। जो सारी दुनिया में समान रूप से बोली जाती है। और उसके शब्द भी इतने अचुक होते हैं जिसके उच्चारण से ही किसी वस्तु की उपयोगिता, विशेषता और उस वस्तु का नाम भी ध्यान में आ जाये।

प्रचीन काल से ही शिक्षा को जीवन का एक अटूट अंग माना जाता है। समय के परिवर्तन के साथ, शिक्षा का रूप भी परिवर्तन हो गया है। आज शिक्षा के लिए कहा जाता है कि स्वयं को जानना ही शिक्षा है। यह बात, उस जमाने में नहीं थी। उस समय में मानव नैतिकता के शिखर पर था। मानव सिविलाइज्ड था। शिक्षा केवल एक मनोरंजन का रूप था। सतयुग-त्रेतायुग में शिक्षा, खेल के रूप में होती थी। उस शिक्षा में कला, संसकृति का मिश्रण होता है। वह राजकारण और व्यवस्थापन का अभ्यास करेंगे। वे कोई इग्लिश, गणित, अर्थ शास्त्र नहीं पढ़ेंगे और न ही उन्हें आज के बच्चों की तरह बड़े-बड़े बेग अपने कंधों पर उठाकर ले जाते थे। खेल-खेल में पढ़ाई होती थी। वहाँ के राजकुमार, राजकुमारीयों की नॉलेज बहुत रॉयल होगी। पढ़ाने वाले राजगुरू बहुत रम्यता से पढ़ाते हैं। खुले आकाश के नीचे सुंदर, मनोरम प्रकृति के अंग-संग, उनकी पाठशाला होती है, कॉलेज भी होते हैं। वहाँ की सब्जेक्ट संगीत, इतिहास, कला और भूगोल होती है। खेल और मुख्य

सब्जेक्ट चित्रकला है। छोटे-बड़े सब कलाकार, चित्रकार होते हैं।

गायन विद्या के संगीत गायेंगे। वहाँ इतिहास भी होती हैं। पर यह विषय कुछ काल बाद ही पढ़ाई में समाविष्ट होती हैं। उन राजा-महाराजाओं की श्रेष्ठ देवी-देवताओं की जीवन कहानी सुनाई जाती है। यह इतिहास भी संगीत और कविताओं में होती हैं। आज की तरह सीधी-सीधी वार करने वाले नहीं होती है। ड्रामा और प्लेज भी होते हैं, नाटक हँसी और मनोरंजन के होंगे। नाटकशालायें भी काफी संख्या में होंगी। सुन्दर स्थानों की ज्योग्रॉफी भी होंगी। जिससे उन्हें देवी-देवताओं को पिकनिक मनाने के अनेकानेक प्रकार के खेल भी सिखाये जाते हैं। बच्चों और युवकों का ऐसे वातावरण में पालन होगा, जिसमें उनकी कला, योग्यता तथा निजी गुणों को बढ़ावा मिले और इन सबमें उन्नत होने के लिए उन्हें पूरे अवसर पर्याप्त होंगे।

विज्ञान और तकनीकी

1. विज्ञान

वहाँ आकाश एक राजमार्ग की तरह होता है। यह मानों सबसे बड़ा हाई-वे हो बाकी सारे रास्ते इस आकाश हाई-वे के मुकाबले छोटे होते हैं। विमान तो इतने सारे होते हैं कि हर कार्य के लिए अलग विमान इस्तेमाल किया जाता है। जैसे किसी बहुत बड़े कार्यक्रम में जातना हो तो विमान भी बड़ा और विशेष इस्तेमाल करते हैं। और यदि हमेश की तरह किसी साधारण से कार्य के लिए जा रहे हैं तो विमान भी साधारण ही होते हैं। विमान भी उनमें कितने लोग बैठ सकते हैं इसके अनुसार अलग अलग क्षमता अनुसार होते हैं। वैसे उनके आकार भी कई प्रकार के होते हैं जैसे कोई फूल के आकार का या कोई पक्षी के। वे इतने तेज होते हैं कि आप किसी भी जगह पर इतने से समय पर पहुँच सकते हैं जितना कि आज के लोगों को फोन करने में लगता है। इसलिए वहाँ फोन की कोई जरूरत नहीं होती है। क्योंकि अगर किसीको कोई संदेश भेजना है तो उनका सेवक चंद मिनट या सेकण्ड में पहुँचा कर आ सकता है। वह सारे विमान ध्वनि से भी तेज गति से चलते हैं।

विमान को चलाना भी बहुत आसान होता है। बस बटन दबाने की देर होती है

और वह उडना शुरू हो जाता है। और दूसरा बटन दबाते ही वह नीचे भी उतर आता है। यह सब इतना सरल होता है कि कोई बच्चा भी इसे आराम से उड़ा सकता है। क्योंकि वहाँ कोई दुर्घटना होती ही नहीं है। वहाँ जिन भी कार्यों में उर्जा की जरूरत होती है उसमें अणु-ऊर्जा का प्रयोग किया जाता है। लेकिन वह भी फ्युजन तरीके से होता है, ना कि फिजन। इसलिए वह बहुत ही प्रदुषण रहित सुरक्षित होता है। सोने हीरे के पत्रे महल बनाने में इसतेमाल किए जाते हैं और उनमें ऐसे तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है, जैसे आज काच को पारदर्शक बनाया जाता है इसलिए उनमें किए हुए अलग अलग बदलाव से सूरज और चाँद की रोशनी कम या ज्यादा अंदर आ सकती है। दीवारों पर हीरे इस तरह जड़े होते है कि वह सूरज या चाँद को इस तरह परिवर्तित करे कि महल मेंहर जगह इन्द्रधनुष्य की छटायें दिखाई पड़ती है। इन हीरों से दमकती या परावर्तित होती रोशनी लोगों के हर कार्य के लिए पर्याप्त होती है इसलिए आज की तरह चमकते लाइट्स की जरूरत नहीं होती।

सूरज की किरणें इस तरह इस्तेमाल की जाती है कि खाना बनाने के लिए उसी ऊर्जा का इस्तेमाल किाया जाय। इस तरह खाना बनाने के लिए पूरी तरह से सौर ऊर्जा इस्तेमाल होती है। इस प्रक्रिया के लिए एक धातु की बड़ी पट्टी इस्तेमाल की जाती है जो सूरज की किरणों को परावर्तित करती है। वहाँ भी छोटे-छोटे कारखाने होते हैं लेकिन उनमें भी बहुत ही सादगी होती है। क्योंकि वहाँ सब पदार्थ भी बहुत हल्के होते हैं। यहाँ तक की बड़े-बड़े निर्माण कार्य भी बिना किसी तनाव के किए जाते हैं।

आने वाली स्वर्णिम दुनिया में विज्ञान और टेकनोलॉजी का बड़ा सुंदर समन्वय होगा। वहाँ हर कार्य, विज्ञान और टेकनोलॉजी के आधार पर ही चलता है। ऐसे अनेकानेक रिफाइन्ड साधनों के निर्माण का कार्य वर्तमान समय तेज रफ्तार से चल रहा है।

आज अणु ऊर्जा के विमान की योजना बनाई गई है इसकी तैयारीयाँ सोलार ऊर्जा के द्वारा कई साधनों का निर्माण किया जा रहा है। सोलार पर चलने वाली मोटर-गाडी, कुकर, बिजली आदि चीजों की डबल रिफाइन्ड स्टेज अब ही आने वाली है। जिसे स्वर्णिम दुनिया में प्रयोग में लाया जाएगा। वहाँ अणु ऊर्जा के आधार

पर हर कार्य चलेगा।

स्वर्णिम दुनिया में, आज के युग की तरह लंबी-लंबी इलेक्ट्रीक की तारें बिल्कुल नहीं होगी। इन तारों की आवश्यकता वहाँ नहीं पड़ेगी। वहाँ महलों को प्रकाशित करने के लिए फ्लोरोसेन्ट टयुब लाइट्स की जरूरत नहीं पड़ेगी और न ही हवा के लिए बिजली के पँखों की आवश्यकता पड़ेगी। न ही वातानुकुलित यंत्र, कुलर, गीझर, रेफ्रिजरेटर की आवश्यकता पड़ेगी। वहाँ न टेलिफोन होगा और नह कम्प्युटर होंगे।

इन चीजों के बिना आज के युग में मनुष्य को जीवन जीना असंभव लगता है। पर स्वर्ग में यह साधन प्रकृति ही प्रदान करेगी।

स्वर्ग की दुनिया में लाइट आदि जैसे नैचुरल रहती है, चंद्रमा की चाँदनी यदि काफी नहीं लगती, तो एक दीपक जलाने से चारों ओर जगमगाती हुई चाँदनी बिखर जाती है..... आज कभी-कभी टयुबलाइटस ऑन होने में भी कई सेकण्डस लगते हैं परंतु वहाँ एक सेकण्ड में ही महल रंग-बिरंगी लाइट से सज जाता है। सोने की लाइट और हीरों की लाइट अथवा चमक इन दोनों के मेल से महल जगमगाता हुआ नजर आएगा। एक-एक हीरा इतनी रोशनी देगा जो वन्डरफुल लाइट होगी।

सदा बहारी मौसम होने के कारण गर्मी नहीं होती है और पँखों की आवश्यकता नहीं पड़ती है। स्नान आदि के लिए कभी ढण्डा, कभी गरम पानी का उपयोग नहीं करना पड़ेगा। ताजगी भरे पानी में डूबकी मारने से ही तरोताजा हो जाते हैं। गिझर की आवश्यकता नहीं पड़ती।

भोजन बनाने के लिए आज जैसे मायक्रो ओवन होता है जिससे कुछ मिनटों में भोजन बनता है, ठीक उसी प्रकार वहाँ पर सूरज की किरणों से चलने वाले सुंदर कलाकृतिक मायक्रोवेव्ह रिफाइन्ड रूप में होंगे।

आज की दुनिया की हाय-फाय म्युजिक सिस्टम नहीं होंगे। सीडी, ऑडियो-वीडियो केसेटस नहीं होंगे। इससे भी कई गुना अधिक हाय-टेकनोलॉजी का म्युजिक वहाँ प्रकृति प्रदान करेगी। वहाँ मनोरंजन कराने पशु, पंछी होंगे, जिनकी बोली के आगे आज के आधुनिक जगत के म्युजिक सिस्टम कुछ भी नहीं। पानी की खल-खल की आवाज, वृक्ष के पत्तों की टकराने की आवाज, सुंदर सुर, ताल, लय में

इन पंछीयों को भी साथ देगी।

वहाँ अनाज, फल-फूल, सब्जियाँ लंबे समय तक भी पेड़ों पर फ्रेश रहते हैं। उसे निकाल कर स्टॉक में रखने की अथवा रेफ्रिजरेटर में भरने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वहाँ अनाज के लिए कोई स्टॉर रूम नहीं बनेगा। अनाज खेती से निकाल कर, मशीन में डाला और पकाया, इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा।

वहाँ रहने वाले देवी-देवताओं की जीवन शैली लोग आज भी याद करते हैं। भक्तजन उनके गुणगान में गाते हैं..... सर्व गुण सम्पन्न, ... उनकी संकल्प शक्ति पवित्र होने के कारण संकल्प कुछ समय में ही पूरा होता है। तो फिर टेलिफोन, मोबाइल की आवश्यकता ही क्यों?

वहाँ आकाश सभी के लिए राज्य पथ बनेगा। विमान के लिए आकाश ही पथ होगा। यह बिना अकस्मात का रास्ता होगा। सोने से बनाये हुए और हीरे-माणिक से जड़े हुए विमान बहुत हल्के और पशु-पंछियों के, तितलियों के आकार के होंगे। विमान शुरू किया और आवाज से भी पहले पहुँचेगा, इतनी तेज स्पीड होगी। इसलिए फोन करने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

विमान का बटन दबाया यह चला, बटन दबाया और नीचे उतरा। कोई दिमाग चलाना नहीं पड़ेगा। जैसे आजकल पायलट खास ट्रेनिंग लेते हैं। वहाँ तो चाहे आठ साल का बच्चा विमान चलाये वो भी गिरेंगे नहीं। मशीन बिल्कुल परफेक्ट होगी। खराब आदि कभी नहीं हो सकती। सेकण्ड में स्कूल वा घुमने फिर ने पहुँच सकते हैं।

2. कम्युनिकेशन

कम्युनिकेशन के दुनिया में अनेकानेक परिवर्तन हुए। कुछ साल पहले कम्युनिकेशन मनुष्यों द्वारा अर्थात डाक द्वारा भेजी जाती थी। उसके कुद शताब्दी पहले डाक पंछियों द्वारा भेजी जाती थी परंतु आज सायन्स नई टेकनोलॉजी कम्प्युटर आदि के कारण कम्युनिकेशन की गति इतनी तेज हो गयी है कि तुरंत ही अर्थात जब चाहो उसी समय। परंतु भविष्य सतयुग में कम्युनिकेशन उससे भी आगे होगी वह है संकल्पों के द्वारा। वहाँ संकल्पों के द्वारा ही हर बात पहुँचायी जाती है। संकल्प किया और संदेश पहुँच गया।

सतयुग का कम्युनिकेशन एरोप्लेन से होगा, जिसकी गति आवाज से भी तेज होगी इसलिए वहाँ फोन की अथवा पोस्ट की आवश्यकता नहीं होती।

कला और संस्कृति

सतयुग में जल्दी माना अमृतवेले ही उठते हैं। उठते ही नैसर्गिक संगीत की ध्वनि आपके कानों में पड़ती है। जो सरसराती हवा पत्तों के बीच से गुजरते हुए जो मधुर आवाज जगाती है। पंछीयों की चहचहाट इस नैसर्गिक मधुरता को भी और निखारती है। और इसी के साथ आप उठकर बैठते हैं एक उमंग, प्यार, उत्साह, शान्ति आपके दिल में लिए।

उसके पश्चात खुबसुरत बगीचे में टहलने निकलते हैं, जहाँ फूलों से मानो खेलते हैं और इन सुगंधीत और रंगबिरंगी फूलों के सानिध्य से प्राकृतिक शक्ति मिलती है और इस तरह से सिर्फ बगीचे के बीच इस साधारण प्राकृतिक खेल से ही सारा शरीर तरोताजा महसूस करता है। वहाँ जीवन, चिंता मुक्त है जो प्यार और खुशियों से भरपूर है। वहाँ हर कोई अपनी अपनी योग्यता के अनुसार कोई न कोई काम जरूर करता है। वहाँ दिल बहलाने के लिए और मनोरंजन के लिए कई कार्यक्रम और कई साधन होते हैं। लोग या तो नृत्य के कार्यक्रम में जाते हैं या मित्रों से मिलने जाते हैं। या रंगमंच के कार्यक्रमों से अपना मन बहलाते हैं। वहाँ दु:ख का कोई नाम-निशान नहीं होता है, सिर्फ खुशियाँ खिल-खिलाहट और संगीत होता है।

वहाँ रंगमंच पर नाटक प्रस्तुत करने वाली मण्डली होती है। वहाँ के संगीत वाद्य सोना-चाँदी या लकडी के बने होते हैं, जो हीरों से सजे होते हैं। अलग अलग उत्सवों में अलग तरह का संगीत और गीत गाये अथवा बजाये जाते हैं। वहाँ राजघराने के लोग भी उत्कृष्ठ संगीत बजा सकते हैं। लेकिन ज्यादातर वहाँ संगीतकार होते हैं जो उनका संगीत से मनोरंजन करते हैं।

1. सजावट

सतयुग में सोने के महल होंगे। महल की ईंटे सुन्दर आकृति वाले साँचे में

डालकर बनाई जाती है। इसे बनाने में समय नहीं लगेगा, मशीन के द्वारा मिनट मोटर में तैयार होगा। इन सोने की ईंटों में फिर जहाँ-जहाँ अलग-अलग आकार के आकृति के रंग लगाये जाते हैं, जिससे सूरज की शीतल किरणों के कारण दिन में उनकी चमक-दमक देखने बनती है। रात में झिलमिलाते सितारे और चन्द्रमा की चाँदनी से हीरे और स्वर्ण चमकते हैं। महलों के आन्तरिक डेकोरेशन अलग प्रकार के होते हैं। छत मनमोहक कलाकृति को प्रदर्शित करती है। जैसे आज भी भारत में दिखाए मंदिरों की छतें पर्यटकों को भी स्तब्ध कर देती है, इससे कई अधिक आकर्षक छतों की डिजाइन होगी, उनमें हीरे-माणेक जड़े हुए होते हैं। जहाँ-वहाँ सोन से बने सुन्दर झुमर लटकते हुए दिखाई देते हैं।

प्रवेश द्वार बिना कोई दरवाजे की काफी लंबी-चौड़े होते हैं। जैसे आजकल कई घरों में सींप के पर्दे जैसे लटकाए रहते हैं, वैसे वहाँ दरवाजे की जगह हीरों से बनाए गए पर्दे लटकते हैं। खिडकियाँ बड़ी आलिशान होगी। जिसमें शो के लिए अलग-अलग रंगों के मखमली जरी के पर्दे होंगे। जहाँ-जहाँ महलों के अन्दर छोटे-छोटे खुश्बूदार फूलों के बगीचे होते हैं। ये बगीचे बड़े शोभनिक लगते हैं। बैठने के लिए आसन, भोजन के टेबल, आदि खुश्बूदार चंदन की लकडी से बनते हैं। जिनमें सोने की पट्टी और हीरे जड़े हुए होते हैं।

2. अलंकार

स्वर्ग के देवी-देवताओं को सम्पन्नता के प्रतीकों में से एक है - नवरत्नों से सजे स्वर्णिम अलंकार। उनके कमल समान मस्तक से लेकर पाँव की उंगलियों तक के पवित्र अंगों को श्रृंगार ने का सन्मान हीरे-रत्नों से सजे स्वर्णलंकार को मिलता है। मस्तक पर स्वर्णिम रत्नजड़ित ताज, गले में नवरत्नों से जगमगाता हार, बाँहों में हीरों से शुशेभित बाजुबंध, कानों में कनक कुण्डल, हाथों में स्वर्ण कंगन, कमर में कोमल सा कंचन पट्टा, हाथों और पैरों की बीसों उंगलियों में रंगबिरंगी हीरों की अंगुठीयाँ, पैरों में स्वर्ण संगीत की झंकार सुनाती सुनहरी पायल ऐसे फूलों से भी हल्के हीरे-रत्नों से जड़ित स्वर्णिम अलंकार देवी-देवताओं के पावन अंगों को अलंकृत करते हैं।

मनोरंजन

1. संगीत

स्वर्णिम युग मे देवी-देवताओं को लिए प्रकृति ही संगीत सुनाती है। अर्थात प्रकृति के पाँचों तत्त्व ही संगीत के साधन बन कार्य करते हैं। मधुर और शीतल हवायें पेड़ के पत्तों को हिलाकर अनेक प्रकार के साजों से सजाती है। हर एक पेड़ के पत्ते हवा में लहराकर एक नये साज का निर्माण करते हुए संगती को वातावरण में फैलाते हैं। जल का अपना एक मधुर संगीत होता है। वहाँ पर छोटे-छोटे झरनों के द्वारा गिरता हुआ पानी अनोखे प्रकार का संगीत फैलाकर वातावरण को आनंदित करता है। यहाँ पर बारिश के दिनों में बिजली के चमकने के साथ बादल के गरजने की आवाज आती है, परंतु वहाँ पर बहारी मौसम होने के कारण बादल के गरजने की आवाज बारह महीने आती है किन्तु नित्य नये संगीत के साथ, एक सुरीली लय के साथ। आकाश तत्त्व भी संगीत को बहाकर देवी-देवताओं को प्रफुल्लित करने के लिए पल पल तत्पर रहता है। ऐसे ही पाँच तत्त्वों के साधन ही जैसे, जलतरंगः- वहाँ पर हीरों के प्यालों में जल को भरकर जल के तरंगों से नये नये संगीत के साज सजाते हैं। सितारः- हीरे-रत्नों से सजे हुए सोने के सितार में सोने की तारों से सुमधुर संगीत देवी-देवताओं के कर्णों में मीठास भरता है। मुरलीः- रत्नों-मणिक से श्रृंगारी स्वर्णिम मुरली देवी-देवताओं के मन को मोहित करने सुरीले संगीत के सुरों को बहाती है। ऐसे अनेक प्रकार के देवी-देवताओं के दिल को दिव्यानंदित करने मनोरंजन के स्वर्णिम साधन होते हैं।

2. पिकनिक

देवी-देवताआके का जीवन आनंदमय सुखमय होता है। आनंदित होने के प्रकारों में एक प्रकार है पिकनिक पे जाना, जिस तरह आज हम दूर-दूर विदेशों में जाते हैं, परंतु वहाँ पर सारा विश्व अखण्ड भारत देश होने के कारण भारत में ही दूर-दूर जाते हैं। जहाँ सागर के किनारे वा छोटी-छोटी पहाडियाँ होती है। सागर की शान्त लहरें सुमधुर संगीत लहराते पूरे वातावरण को आनंदित करती है। सागर के

स्वच्छ किनारों की सुनहरी मिट्टी धरती को स्वर्णिम बनाती है। सागर का किनारा और निर्मल जल इन्द्रधनुषी रंगों से रंगबिरंगी, कभी लाल, कभी पीला, कभी नीला दिखाई देता है।

वहाँ छोटी-छोटी पहाडियाँ भी फल-फूल, सुंदर पक्षी आकार एवं रंगीन फूलों से हरियाली बिखेरे हुए होते हैं। हर पहाडी अलग अलग फूलों की सुगंध से सुवासित होती है। जैसे पशु-पक्षी का आकार, वैसे ही अनेकानेक कलर, कोई पीले फूलों से, कोई नीले फूलों से सजी पहाडियाँ।

वहाँ पर जाकर देवतायें अनेक प्रकार के खेलों द्वारा आनंद लेते हैं। कभी वहाँ के मनमोहक दृश्यों से चित्रकार अपने शौक को पूर्ण करते हुए प्रफुल्लित होते हुए, तो कभी सुमधुर फलों के रसो एवं अनेक प्रकार के व्यंजनों का स्वादानंद लेते है।

प्रकृति

वहाँ प्रकृति और वातावरण पूरी तरह से शुद्ध और ताजगी भरे होते हैं। भूमि भी सदा पौष्टिक से पौष्टिक और अति स्वादिष्ट फल और अनाज देती है। दूसरी बात की वहाँ कई सारी प्राकृतिक झलकियाँ देखी जा सकती है। जिन्हें आप कुदरत का करीश्मा भी कह सकते हैं। जैसे कि कहीं भी स्नान करने चले जाय तो पायेंगे कि वहाँ का जल कई उपयुक्त जड़ी-बुटियों और वनस्पतियों के गुणों से भरपूर है। इसलिए उस जल में भी विशेष गुण होता है। उस जल से एक तरह की नैसर्गिक खुशबू आजी हे जिससे नहाने वाले का मन प्रसन्न हो जाता है। वहाँ की भूमि की, नदियों की, पर्वतों की और सागर के वैभव को देखते ही सतयुगी समाज की अखण्डता, एकता और सुसंवाद का परिचय मिल जाता है।

पहाड भी कोई साधारण पहाड नहीं होते हैं। विविध आकारों में होते हैं, जैसे हाथी या दिल के आकार के बहुत बड़ी गुडिया या प्रतिमा हो। कुछ तो पक्षीयों के और फूलों के आकार के भी होते हैं। उनमें कोई भी कृत्रिमता नहीं होती, उनका वास्तविक स्वरूप ही ऐसा होता है। वहाँ कोई भी बदलाव या कार्य करने के लिए बस

आपका छू लेना ही काफी होता है क्योंकि पाँचों तत्त्व आपकी सेवा के लिए आपके अधीन होते हैं।

विमान में बैठकर ध्वनि की गति से भी तेज जल्द से जल्द कहीं भी पहुँच सकते हैं। वहाँ के हर स्थान की अपनी विशेषता होती है। जिसे देखने देवताए जाते रहते हैं। वहाँ के सारे मौसम सुखद होते हैं। कोई भी मौसम न ज्यादा गरम होता है ना ही ढंड़ा। वहाँ के पाँच तत्त्व उनके मनोरंजन के लिए होते हैं ना कि दु:ख देने के लिए। अग्नि, वायु, भूमि, जल और आकाश ये सब मिलकर प्रकृति की अदभूतता का परिचय देते है। मौसम का बदलाव सिर्फ अलग तरह की खुशी देने के लिए होता है। वह बदलाव बिल्कुल तकलीफदायी नहीं होता है।

वहाँ पृथ्वी पर एक बहुत बड़ा खण्ड होता है जिसे अवकाश से देखने पर लगता है मानों द्वीप को किसी गहरे नीले समुद्र के बीच बिठाया गया हो और उसके इर्द-गिर्द छोटे-छोटे कई द्वीप होते हैं, जैसे सारे पृथ्वी पर कई बिन्दु लगाये गये हैं। यह दृश्य इतना आकर्षक होता है मानो नीले रेशम के मखमली कपड़े पर मोती लगाये गये हैं।

वहाँ लोगों को प्राकृतिक सौंदर्य से पूरी तरह प्यार और लगाव होता है, उनका भी कार्य प्रकृति के विपरीत कभी नहीं होता। बल्कि उनकी भावनाए फूल, पेड़, पौधे और सारे प्राणीयों के अनुकूल होती है। वहाँ पेड़ और पौधे पूरी तरह फलों से लदे हुए होते हैं और इच्छा अनुसार कोई फल तोड़कर खा सकते हैं। वहाँ के सारे प्राणी सौम्य और प्यार भरे होते हैं। कोई हिंसक प्राणी वहाँ नहीं होते हैं।

1. सृष्टि:- (जल, अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी)

स्वर्णिम दुनिया एक छोटे से स्वर्ग मोडेल की तरह होगा। बाकी जो भी इतना विस्तार देखते हैं, वह सब समुद्र में समा जायेगा। सतयुग में जन संख्या कम है और प्रकृति का अपने साम्राज्य के विस्तार का अर्थ पूर्ण स्वतंत्रता है। तब मानव जीवन के कारण प्रदूषित नहीं होती। सिर्फ जनसंख्या की वृद्धि प्रकृति को प्रदुषित नहीं करती है, परंतु मानव की प्रदूषित वृत्ति तथा प्रवृत्ति भी प्रकृति को प्रदूषित करती है।

विज्ञान ने संशोधन किया है कि संगीत बजता है तो उस संगीत के परिणाम

स्वरूप प्रकृति की रचनायें भी ज्यादा फल देती है। प्रेम का असर पशु-पक्षीयों पर भी होता है। तो अवश्य ही सतोप्रधान देवी-देवताओं से पावनता, प्रेम का असर वहाँ प्रकृति तथा पशु-पक्षीयों पर भी होता है। खेतों में भरपूर फसल लहरायेंगे। सभी दिशायें गुनगुना उठेगी। धरती माँ अपनी पूरी शृंगार पर होगी। वहाँ नैचुरल सीन-सीनेरी होंगी। वहाँ पहाड़, पेड़-पौधे सीधे नहीं होते हैं। नैचुरल सुन्दरता के भिन्न-भिन्न रूप के होते हैं। कोई पंछी के रूप में, कोई पुष्पों के रूप में, ऐसी नैचुरल बनावट होती है। पेड़-पौधों के पत्तों की आकृति और टाल-टालियाँ भी सुन्दर डिजाइन से उगती है। बहुत रमणीक स्वर्ग होगा। बहुत अच्छी हवायें लगती रहती है। पानी के झरने बहते रहते हैं। स्वर्ग में बहुत सुन्दर-सुन्दर झाड़ होते हैं। काम की चीजों के लए थोड़े जंगल भी होंगे। हरेक चीज फलदायक होगी। जंगल की शोभा बढ़ाने के लिए वहाँ भी सुन्दर-सुन्दर पशु-पक्षी होंगे। कोई गन्द करने वाले प्राणी नहीं होते।

वहाँ का वातावरण सतोप्रधान होता है। वातावरण में नायट्रोजन, कार्बन डायोक्साइड और ऑक्सिजन संतुलित मात्रा में होता है। आज, जंगलतोड बढने के कारण आक्सिजन की मात्रा वायुमण्डल से घटकर 21 प्रतिशत तक पहुँच चुकी है। आक्सिजन की इतनी कम मात्रा होने के कारण हानिकारक किटाणु जीव-जन्तु की संख्या और उनके द्वारा फैलने वाली बीमारियाँ बढ़ चुकी है। परंतु सतोप्रधान संसार में ऑक्सिजन की मात्रा वातावरण में करीबन 40-50 प्रतिशत के आसपास होती है। जिसके कारण, कोई हानिकारक किटाणु नहीं होते। वहाँ लकडियाँ आदि कभी नहीं जलाते।

वह हवा भी प्रथम श्रेणी की होती है। वह कभी तंग नहीं करेगी। इतनी खुश्बूदार हवा होती है कि अगरबत्ती की कभी जरूरत नहीं पड़ेगी। पावन प्रकृति की सुंदर खुश्बू वायुमण्डल में फैली हुई होती है। उस दुनिया में आज की तरह कोई तूफान, गर्म हवायें नहीं चलती। भूकंप, बाढ़ आदि कभी नहीं आते।

वायु नैचुरल पंखा बन जाती है। वह देवताओं के मनोरंजन का साधन बन जाती है। वायु लगेगी और वृक्ष हिलेंगे, डाल-डालियाँ ऐसे झुलेंगी, जिनके हिलने से भिन्न-भिन्न साज स्वत: ही बजते रहेंगे। वहाँ सदैव बहारी मौसम होता है। कभी गर्मी, कभी सर्दी, कभी तेज बारीश आदि नहीं होता। छाते, स्वेटर की कभी जरूरत नहीं

पड़ेगी।

वहाँ का जल, इत्र-फुलेल का कार्य करेगा। जैसे आज भी जड़ी-बुटियों के कारण गंगाजल और जल से पवित्र हैं, ऐसे खुशबूदार जड़ी-बुटियाँ होने के कारण जल में नैचुरल खुगबू होगी। जैसे यहाँ दूध शक्ति देता है, ऐसे वहाँ का जल ही शक्तिशाली होगा, स्वच्छ होगा। वहाँ पहाडों पर खुशबू की जड़ी-बुटियों समान बुटियाँ होगी तो वहाँ से जल आने के कारण नैचुरल खुशबू वाला होगा। जैसे यहाँ दीवाली के दिनों में सुगन्धित उठनों से नहाते हैं, ऐसे वहाँ रोज खुशबू वाले पानी से नहाते हैं। पाली में कोई इत्र आदि नहीं डालनी पड़ेगी। पीने के पानी की व्यवस्था नदियों से होती है, पानी तो जंगलों से बहता हुआ आने के कारण अनेक जड़ी-बुटियों से शुद्ध और सुगन्धित होता है और अमृत समान बन जाता है। स्नान आदि के लिए महलों में ही रंगबिरंगी सुंदर खुशबूदार फूलों के बाग के बीच तालाब होते हैं। तालाब का पानी भी बहता हुआ होने के कारण सदा शुद्ध वा शीतल रहता है। ऐसे ही परिवार के सदस्य का अलग अलग तालाब होता है जिसमें राज परिवार का हर एक सदस्य अपने अपने दास-दासियों के साथ स्नान का आनंद लेते हैं। वहाँ पसीने आदि की बात नहीं होती जिसके कारण साबुन, शैम्पू आदि की जरूरत नहीं पड़ती। कपड़े धोने के लिए भी साबुन आदि की जरूरत नहीं पड़ती। क्योंकि मैले नहीं होते या दाग आदि नहीं लगते। राज पविार के तो एक दिन में अनेक पोशाख बदलते हैं और नित्य नये पोशाख होते हैं इसलिए इनके धोने की बात ही नहीं। किन्तु दास-दासियों के पोशाख भी सिर्फ सुगन्धित पानी में निचोड़ लेते हैं। वहाँ पर पानी के एकत्री करण की भी आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि आबादि की कमी के कारण पानी की कटौती आदि नहीं होती और महल एवं गाँव आदि नदी के किनारे ही बसे होते हैं।

वहाँ सभी नदियाँ बड़ी साफ, स्वच्छ होगी। नदियों में कोई भी किचड़ा आदि नहीं रहता। बहुत सुन्दर-सुन्दर तालाब होंगे जिसमें तरह-तरह के रंग-बिरंगी कमल खिले हुए रहते हैं। सफेद हँसों के जोड़े विचरण करते हैं। सतोप्रधान प्रकृति मानव की सेवा में नितांत खड़ी रहेगी। सतयुग के भाग्यवान देवता कितने भाग्यशाली है कि वह प्रकृति जिन्हों की दासी थी। जब समस्त विश्व उनका था। जब आकाश, जल,

जमीन में कोई बटवारा नहीं होता था।

2. पशु और पंछी

सतयुग में पक्षीयों विविध प्रकार के सुंदर, सुडौल पंखों वाले होली के रंगों के तरह विविधता से भरे होते हैं। कुछ खेल दिखाकर बहलाने वाले, कुछ मधुर बोली से मन को मुग्ध करने वाले, कुछ झंकार की आवाज की तरह, तो कुछ घंटी की आवाज की तरह मानो वे एक सूर और ताल में गा रहे हैं। जैसे कि एक अनुपम संगीत का निर्माण कर रहे हो। कई पक्षीयों की व्यंगात्मक चाल या किसी पक्षी का शाही रूप कई मनोरंजन खेलों में नाटक में इस्तेमाल किया जाता है। उन पंछीयों के नृत्य वा खेल देखने के लिए विशेष स्थान नियुक्त किये होते हैं।

पशु भी विविध रंग के सुडौल और रोमांचक होते हैं। हिरण, गाय, खरगोश जैसे प्राणी बाग-बगीचे में घुमने वाले होते हैं। हिरण के सुंदर रूप जैसे सोने का मोहर लगा हुआ शरीर मन को मोहित कर देता है। हिरण भी अनेक रांगों के जैसे, लाल, नीला, पीला केसरी, नारंगी आदि रंगों के होते हैं। विविध रंगों के खरगोश रूई जैसे कोमल शरीर वाले जो खेलों में इस्तेमाल किये जाते हैं। बाकी के बड़े-बड़े प्राणी जंगलों में निवास करते हैं। शेर, हाथी, घोड़ा आदि बड़े प्यार से जंगलों में रहते हैं।

ऐसे सुंदर स्वर्ग में हम आ सकते हैं?

स्वर्ग भूमि या स्वर्णिम संसार की इस अनोखी जीवन शैली का अवलोक करने के पश्चात हर एक के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यह स्वर्णिम युग कब आयेगा और उसमें हम आ सकते हैं या क्या किया जाय जो हम भी उस स्वर्णिम युग के हकदार हो सके।

इसके स्पष्टीकरण हेतु हमें निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से दिये गुह्य सत्य गीता ज्ञान को समझना होगा।

आज के वैज्ञानिक युग में मनुष्य मन में सृष्टि के आदि काल के बारे में उठ रहे सवालों का जवाब देने का प्रयास विज्ञान, इतिहास, ज्योतिष और भूगर्भशास्त्री

अपने-अपने स्तर पर दे रहे हैं। परंतु यह एक बात कोई भी अस्वीकार नहीं करता कि इस सृष्टि का एक निश्चित इतिहास और भूगौल है। यह सृष्टि चक्र एक निश्चित अवधि में पुनरावृत्त होता है।

संसार में हम देखते हैं हर एक चीज चक्रिय अवस्था से गुजरकर एक निश्चित समय पर पुनरावृत्त होती है। जैसे कि दिन के बाद रात्रि और रात्रि के बाद पुनः दिन..... बीज से वृक्ष, वृक्ष से फल और फल से पुनः बीज..... आत्मा मनुष्य का शरीर धारण कर बाल्यावस्था में आना, युवा, प्रौढ़ और वृद्ध होने के पश्चात पुनः बाल्यावस्था में प्रवेश सृष्टि में चक्राकार रूप से बदलते और पुनरावृत्त होते मौसम यह सभी बातें पुनरावृत्त को दर्शाती है।

इसी प्रकार सृष्टि रचयिता ज्ञान सागर, त्रिकालदर्शी मनुष्यों को देवपद दिलाने वाले महादेव परमात्मा शिव ने यह स्पष्ट रूप से बताया है कि इस संसार में सर्व प्रथम सतयुग, स्वर्णिम युग था, ततपशृचात त्रेतायुग (सेमी स्वर्ग) फिर द्वापरकाल और फिर कलियुग......।

सतयुग और त्रेतायुग मिलाकर ही हम स्वर्णयुग का गायन करते हैं। इस किताब में आपने जो वर्णन पढ़ा वो इसी दिव्य युग में मनुष्यों की जीवनचर्या है जो इतिहास में वर्णन है।

समय के गुजरते जैसे हर चीज नूतन से मध्यम और मध्यम से फिर कनिष्ठ अवस्था में प्रवेश होती है। वैसे ही सतयुग के आदि में मनुष्य आत्मा और प्रकृति के सभी तत्त्व अपनी नूतन अर्थात सतोप्रधान अवस्था में थे फिर समय के गुजरते आत्मा और प्रकृति दोनों अपने मध्यम, रजोगुणी और कनिष्ठ तमोप्रधान अवस्था को प्राप्त हुए, जैसे सतयुगी सतोप्रधान अवस्था स्थाई नहीं रही ऐसे यह तमोगुणी कनिष्ठ अवस्था भी स्थाई नहीं रहेगी।

तमोप्रधान आत्मा और प्रकृति दोनों का पुनः सतोप्रधान बनाने के लिए सृष्टि रचयिता परमात्मा इस सृष्टि मंच पर अवतरित होते हैं। उसी समय को पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। कलियुग का अन्त और सतयुग की शुरूआत इसके बीच का समय इसी समय में जो मनुष्य आत्माएँ परमात्मा द्वारा दिया जानेवाला ज्ञान डायरेक्ट सुनकर अपने जीवन में उसे धारण करती है। और सर्व शक्तिवान परमात्मा

से अपने बुद्धि का योग जोड़कर अपने विकर्मों का विनाश करती है। वे आत्मायें पावन, सतोप्रधान बन सतयुग की अधिकारी बन जाती है।

तो आईये, प्रिय आत्मन भाईयों और बहनों अपने देहभान के वश स्मृति में उभरे सभी जाति-भेद, धर्म-भेद, लिंग-भेद इनसे ऊपर उठकर अपने स्व-स्वरूप को पहचान कर उस निराकार परमात्मा की श्रीमत को जीवन में अपनाकर सतयुगी स्वर्ग का अपना जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त किजिए।

यही समय है जिसमें आप अपने जीवन को पुन: सतोप्रधानता तक पहुँचा सकते हैं। क्योंकि स्वयं सर्व समर्थ परमात्मा अब इस दिव्य कर्तव्य अर्थ अवतरित हुए हैं। 'अभी नहीं तो कभी नहीं'।

'You can not change the time but it is time for you to change.'

स्वाभाविक है आपके मन में कई प्रश्न निर्माण हुए होंगे तो उनका समाधान प्राप्त करने हेतु अपने नजदिकी ब्रह्माकुमारीज से सम्पर्क किजीए।

कविता

'स्वर्ग हूँ मैं, स्व पर गर्व है मुझको, स्वर्ग हूँ मैं, स्वर्ग हूँ मैं'

देवों की मैं जन्मभूमि हूँ, देवों की मैं कर्म भूमि हूँ
हँ देवों की नगरी..... स्वर्ग हूँ मैं 2
रंगबिरंगी रोशनी देते, सूरज चाँद सितारे
इन्द्र धनुषी आकाश यहाँ का, धरती यहाँ मतवाली
नयनाभिरम्य पर्वत यहाँ पर, वन भी यहाँ उपवन
हरे भरे खेत यहाँ के, सर्वत्र छायी हरियाली..... स्वर्ग हूँ मैं....2
फलों से लदे बाग यहाँ के, लहराती हर डाली
व्सना लिए हर फल यहाँ का, अनदेखा और निराला
आय-जामून सेब-संतरे, अंगूर, अमरूद, केला
फलों से लदे बाग यहाँ, हर फल यहाँ निराला.....स्वर्ग हूँ मैं.....2

गुलाब, गेंदा, चम्पा, चमेली, रातरानी और माधवी, लता
हर कली यहाँ की फैलाती, हर फल शोभा बढ़ाता
हर कली यहाँ की गीत गाती, हर फल संगीत सजाता
हर गुल देवी देवताओं के पावन नैनों को हर्षाता...स्वर्ग हूँ मैं...2
कमल दल से खिला सरोवर, मंद गति से बहती सरीता
छोटी-छोटी पहाडियों से, झर-झर गिरता झरना
हँस-मोर नाच नाचते, बुलबुल-चिड़िया साज सजाते
कुहूँ कुहूँ करती कोयल, गाते तोता-मैना... स्वर्ग हूँ मैं.....2
झुँड तितलियों का करता कलरव, गुँजन करते भँवरे,
फूल से संचय करती मंडराती यहाँ मधु मखियाँ
देवता है हर आत्मा यहाँ की, लिए मधुर मुस्कान
हर्षितमुख चेहरा इनका, शीतल इनकी अखियाँ... स्वर्ग हूँ मैं.....2
सुंदर कंचन काया होगी, कमल-सा हर अंग
रेशमी वस्त्रों से सजे संवरे, कनक गहनों से अलंकृत
खाने में छप्पन व्यंजन होते, पीने जल अमृत
दूध, घी की नदियाँ होती, खूशबू केसर युक्त..... स्वर्ग हूँ मैं...2
सर्व गुण सम्पन्न होंगे, होंगे धन से भी सम्पन्न
न कोई यहाँ पर इच्छा होती, न कोई यहाँ अभिलाषा
मीठी यहाँ की दृष्टि होती, मधुर यहाँ की वाणी
संस्कारों से सजी संवरी, शुद्ध देवनगरी भाषा...स्वर्ग हूँ मैं...2
हीरा, पन्ना, पुखराज, नीलम, जवाहरातों में जड़े हुए
चकमक चमकते रत्न उनमें, स्वर्ण महलों की ये शान बढ़ाते
पीपल, नीम, इमली, शीशम, पंक्तिबद्ध खड़े हुए
शीतल ठंडी छाया देते, सड़कों की है आन बढ़ाते...स्वर्ग हूँ में...2
देवों की मैं जन्मभूमि हूँ, देवों की मैं कर्म भूमि हूँ
हूँ देवों की नगरी... स्वर्ग हूँ मैं...2
स्वर्ग हूँ मैं, स्व पर गर्व है मुझको,

स्वर्ग हूॅ मैं, स्वर्ग हूँ मैं...